2018-19

ISSN : (P) 0048-7325, (e) 2454-7026
Impact Factor 6.930 (SJIF)

RESEARCH JOURNAL
of PHILOSOPHY & SOCIAL SCIENCES

A Peer Reviewed & Refereed International Journal

Vol. XLIV, No. 2 Dec. 2018

Contents

1.	**India-Bhutan Bilateral Relations** Dr. Bina Rai	1
2.	**A Study on Television Exposure and Academic Achievement of Secondary School Students** Prof. B.L. Lakkannavar	10
3.	**Elementary Education After Independent India : A Survey** Dr. Subhash Singh	16
4.	**Agriculture and Sustainable Development in India** Dr. Triveni Dutt	28
5.	**University Students Attitude toward Indian Political System: A Study of Political Perception** Dr. Shivani	35
6.	**Gender Inequality in Higher Education** Dr. Manjulata, Km. Sapna	39
7.	**Role of Technology in Educational Empowerment** Dr. Anup Singh Sangwan	46
8.	**The Impact of Indian Philosophy on Emerson, the Dean of American Literature** Ruchira Khullar	54
9.	**The Concept of Ethical *Sīla* (Morality) in Buddhism** Ven. Triloka	62
10.	**Mother's Education and Anthropometry of Preschool Children** Dr. Surender Kaur, Dr. Yogita Arora	68

Meena Bala

2018 - 2019

ISSN-0975-2382

UPUEA ECONOMIC JOURNAL

A Biannual-Bilingual Refereed Journal of Economics

VOLUME - 14 CONFERENCE NO. - 14 OCTOBER 2018

14th ANNUAL CONFERENCE

THEME 1

Recent Development Experience and Challenges of Low Income States in India: With Special Reference to UP and Uttarakhand

o o o

THEME 2

Indian Economy: Its Employment Dimension

o o o

THEME 3

Doubling Farmer's Income: Improving Agricultural Viability and Farmer's Income in India

Uttar Pradesh - Uttarakhand Economic Association

Giri Institute of Development Studies, Aliganj, Lucknow

SUPPORTED BY: **NABARD**

PROF. VINOD KIMAR SRIVASTAVA
GENERAL SECRETARY
UTTAR PRADESH-UTTARAKHAND ECONOMIC ASSOCIATION
DEPARTMENT OF ECONOMICS AND RURAL DEVELOPMENT
DR. RAMMANOHAR LOHIA AVADH UNIVERSITY, AYODHYA, U.P.
Mob.No. 09415382891, 08840416701
Email: vksb621@yahoo.com

Ref. No.UPUEA/ PC-04-2021 Date: 09-09-2021

CERTIFICATE

To Whom It May Concern

This is to certify that the Research Paper entitled **"Changing Consumption Pattern in Meerut: An Analysis"** authored by **Ranju Narang & Dr. Neena Batra** has been published in UPUEA Economic Journal (A Biannual-Bilingual Refereed Journal of Economics) Volume 14, ISSN—09752382 page 88-92, October, 2018. The research paper has undergone the complete review process before the publication.

(Vinod Kumar Srivastava)
General Secretary

Changing Consumption Pattern in Meerut: An Analysis

Ranju Narang & Neena Batra***

Introduction

Meerut is a part of National Capital Region (NCR) and one of the largest cities of Uttar Pradesh. Meerut is situated at a distance of 72 kilometers from the National Capital New Delhi and after New Delhi it is the second largest city of the NCR with a total geographical expanse about 172 km^2. Meerut is a hub of real estate business and pace of its development is quite high in terms of educational facilities, infrastructural development, commercial, agricultural, industrial growth, medical and health facilities and social activities.

Meerut is also known as a historical place and can be traced back to the great epic era of Ramayana and Mahabharta. Meerut is mentioned in Mahabharta as 'Mayarashtra'- Kingdom of Maya Danav, father in-law of Demon king 'Ravana'. The city leapt into international prominence because of war of independence in 1857, beginning of general movement of freedom from the British rule, when on 24th April, 1857, 85 troops out of 90 of the 3rd cavalry refused to touch the cartridges resulting into court martial and were sentenced to 10 years imprisonment.

The city is regarded as one of the most significant and emerging industrial area along with having richest agricultural belt in the region.

Today, Meerut is the home to some of the globally famed industries like sports goods, jewellery, scissors, auto parts, auto types, handlooms, power looms and pesticides.

Consumption pattern and the consumption budget reflect the standard of living and level of welfare of a family unit (a group of individuals who live together and take their meals collectively from the same kitchen). Food consumption pattern of family is dependent on many factors i.e. education of members, family assets, income, occupation and demographic specifications. The changes in the consumer tastes, brand

* Department of Economics, R.G. (P.G.) College, Meerut, U.P.

** Department of Economics, R.G. (P.G.) College, Meerut, U.P.

Dr. Deepshikha (Geography) 2018

US Library Congress Control No. BA60004130
ISSN 0072-0925
Refereed Research Journal

THE GEOGRAPHICAL OBSERVER

Vol. 48 (A), 2018

PUBLISHED BY
MEERUT COLLEGE GEOGRAPHICAL SOCIETY
MEERUT (U.P.) INDIA

Contents

1. विकासखण्ड जानसठ में शस्य गहनता का प्रतिरूप एवं वृद्धि दर 1
   डॉ. अनीता मलिक

2. मेरठ महानगर के यातायात प्रारूप में सड़क दुर्घटनाओं का एक भौगोलिक विश्लेषण 7
   डॉ. राजीव कुमार एवं जितेन्द्र कुमार

3. विकासखण्ड हस्तिनापुर में आर्द्रभूमि का ह्रासात्मक वृद्धि एवं पर्यावरण प्रभाव के मध्य सहसम्बन्ध 14
   डॉ. अनीता मलिक एवं मोनू सिंह

4. मेरठ तहसील में ग्रामीण महिलाओं के जीवन स्तर में सुधारः एक भौगोलिक सर्वेक्षण 26
   डॉ. नीरज तोमर, डॉ. मेघा चौधरी एवं डॉ. सतीश कुमार

5. भारत में शिक्षा की वर्तमान स्थितिः एक सर्वेक्षण आख्या 34
   डॉ. नीरज तोमर

6. कृषि उत्पादन पर बढ़ते तापमान का प्रभावः जनपद मेरठ (उ0प्र0) का एक भौगोलिक अध्ययन 3
   डॉ. दीपशिखा शर्मा एवं प्रदीप कुमार

7. औद्योगिकरण के कारण हिण्डन नदी में बढ़ता प्रदूषण (किनौनी गन्ना मिल का एक अध्ययन)
   रश्मि एवं डॉ. स्वाति ठाकुर

8. कृषि भूमि उपयोग का बदलता प्रतिरूप : विकासखण्ड जानसठ (मुजफ्फरनगर) का एक अध्ययन
   उधम सिंह

9. राजस्थान में सूखे की समस्याः भौगोलिक अध्ययन एवं विश्लेषण
   डॉ. पूनम चौधरी

10. मेरठ नगर में महिला अपराध का समकालिक विश्लेषण — 77
डॉ. राजीव कुमार एवं सुनेश कुमार

11. विकासखण्ड लखावटी (बुलन्दशहर) में अवस्थित सदांहरित तालाबों के जल की गुणवत्ता एवं सम्बन्धित क्रिया–कलापों का अध्ययन — 85
डॉ. दीपशिखा शर्मा

12. समन्वित ग्रामीण विकास हेतु लघुस्तरीय नियोजन–बाड़मेर जिला का एक भौगोलिक अध्ययन — 96
डॉ. मित्रा सेजवार एवं नवीन सिंह

13. गाजियाबाद जनपद के मुरादनगर विकास खण्ड में कृषि में आये परिवर्तनों के कारण पोषण स्तर में गिरावट का एक भौगोलिक अध्ययन — 106
महाराज सिंह

1, 15:22 PHOTO-2021-10-05-05-32-37.jpg

6

कृषि उत्पादन पर बढ़ते तापमान का प्रभाव: जनपद मेरठ (उ0प्र0) का एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. दीपशिखा शर्मा * एवं प्रवीण कुमार **

सारांश

कृषि भूगोल, भूगोल की एक महत्वपूर्ण शाखा है। भारतीय अर्थव्यवस्था पूर्ण रुप से कृषि पर निर्भर है एवम् भारतीय जनसंख्या का भरण पोषण करने के लिये कृषि क्षेत्र पर लगातार दबाव बढता जा रहा है। साथ ही साथ मौसम की प्रवृत्तियों का अनिश्चित रुप से परिवर्तित होने से भी कृषि उत्पादकता में दिन प्रतिदिन कमी होती जा रही है। जिससे कि खाद्यान आपूर्ति के सकट की समस्या भी उत्पन्न हो सकती है। क्योकि जनसख्या प्रतिदिन बढती जा रही है, और कृषि क्षेत्रफल भी घटता जा रहा है तथा भू-जोत का आकार भी प्रतिवर्ष घटता ही जा रहा है। किसान जितनी लागत कृषि फसलों के उत्पादन करने में लगा रहा है, उतना उत्पादन मूल्य वह प्राप्त नही कर पा रहा है।

प्रस्तावना

कृषि को नैतिक, सामाजिक व आर्थिक आदि कारक प्रभावित करते है। कृषि एक ऐसी आर्थिक क्रिया है जो मौसम के विभिन्न तत्वों–तापमान, वर्षा, आर्द्रता, पवन प्रवाह, पाला, कोहरा आदि के द्वारा अधिक प्रभावित होती है। वैज्ञानिकों का ऐसा मानना है कि वायुमण्डल में कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा बढने से प्रकाश संश्लेषण अधिक होगा तथा जिससे फसलों की पैदावार बढ़ सकती है, परन्तु इसके विपरीत यदि तापमान बढता है तो फसल पैदावार में कमी भी हो सकती है, क्योकि पौधों में नमी का अभाव होगा जिससे पानी व पोषक तत्वों के प्रति अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। विद्वानों में 'एम0 लाल' ने वर्ष 2001 में अनुमान लगाया है कि भारत में सन् 2020 तक सर्दियों में होने वाली वर्षा में 5 से 20 प्रतिशत की कमी की संभावना है, जबकि मानसून की वर्षा मे 10 से 15 5 प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है। मौसम परिवर्तन में दलहनी व धान्य फसलों के उत्पादन में कमी की संम्भावना अधिक जतायी जा रही है, जिससे खाद्यान्न उपलब्धता पर सबसे बड़ा खतरा निम्न उत्पादन की समस्या का है। 'आई0 पी0 सी0 सी0 2007' की रिपोर्ट के अनुसार यदि तापमान में (0.140 से0ग्रे0 से 0.580 से0 ग्रे0) तापमान

* एसोसिएट प्रो0, भूगोल विभाग, आर0जी0पी0जी0 कॉलेज, मेरठ

** शोधार्थी, भूगोल विभाग, आर0जी0पी0जी0 कॉलेज, मेरठ

2021-10-4 19:38

11

विकासखण्ड लखावटी (बुलन्दशहर) में अवस्थित सदांहरित तालाबों के जल की गुणवत्ता एवं सम्बन्धित क्रिया–कलापों का अध्ययन

डॉ० दीक्षिका शर्मा *

सारांश

अध्ययन क्षेत्र में दो प्रकार के तालाब अवस्थित है सदांहरित तालाब, मौसमी तालाब। जल में डी०ओ०, बी०ओ०डी० व सी०ओ०डी० की मात्रा के आधार पर तालाबों के जल की गुणवत्ता का निर्धारण किया गया है। अध्ययन क्षेत्र मे अवस्थित कुल 21 सदांहरित तालाबो में से एक तालाब उपयुक्त जल वाला, तीन तालाब प्रदूषित जल वाले तालाब है। जबकि अधिकांश (17) सदांहरित तालाब कम प्रदूषित जल वाले तालाब है। अध्ययन क्षेत्र में तालाबों के जल की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले क्रिया–कलापों को दो वर्गों में रखा गया है 1. सामाजिक क्रिया–कलाप 2. आर्थिक क्रिया–कलाप। सामाजिक क्रिया–कलाप के अन्तर्गत–आबादी का अवशिष्ट जल, घरेलू अवशिष्ट पदार्थ, नहर के जल की उपलब्धता, पर्वेशी नहलाना, धोबी घाट तथा आर्थिक क्रिया–कलाप के अन्तर्गत–मत्स्य पालन, सिंघाड़ा उत्पादन, कृषि उर्वरक व कीट-नाशकों का विलय, पटशन दबाना, साप्ताहिक बाजार, बतख पालन, कृषि अवशेष्ट पदार्थ, बतख पालन को सम्मिलित किया गया है

तालाबों के जल की गुणवत्ता पर सामाजिक–आर्थिक क्रिया–कलापों के प्रभाव का अध्ययन किया। जिससे स्पष्ट होता है कि तालाबों के जल की गुणवत्ता को आर्थिक क्रिया कलापों की अपेक्षा सामाजिक क्रिया कलाप अधिक प्रभावित करता है। सामाजिक क्रिया–कलापों मे आबादी का अवशिष्ट जल तथा आर्थिक क्रिया–कलापों मे साप्ताहिक बाजार तालाबों के जल को प्रभावित करने वाले मुख्य क्रिया कलाप है।

संकेत शब्द–सदांहरित तालाब, मौसमी तालाब, सामाजिक क्रिया–कलाप, आर्थिक क्रिया–कलाप।

प्रस्तावना

भू-पृष्ठीय जल के अन्तर्गत नदी के जल, झील के जल, तथा तालाब के जल को सम्मिलित किया जाता है। बढ़ती हुई आबादी के कारण घरेलू गन्दगी और गलमूत्र की अधिकांश मात्रा बिना किसी उपचार के सीधे ही नदियां या तालाबों में मिल जाती है।

* एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, आर०जी० (पी०जी०) कॉलेज, मेरठ।

Dr. Deepshikha Sharma (Geography) 201

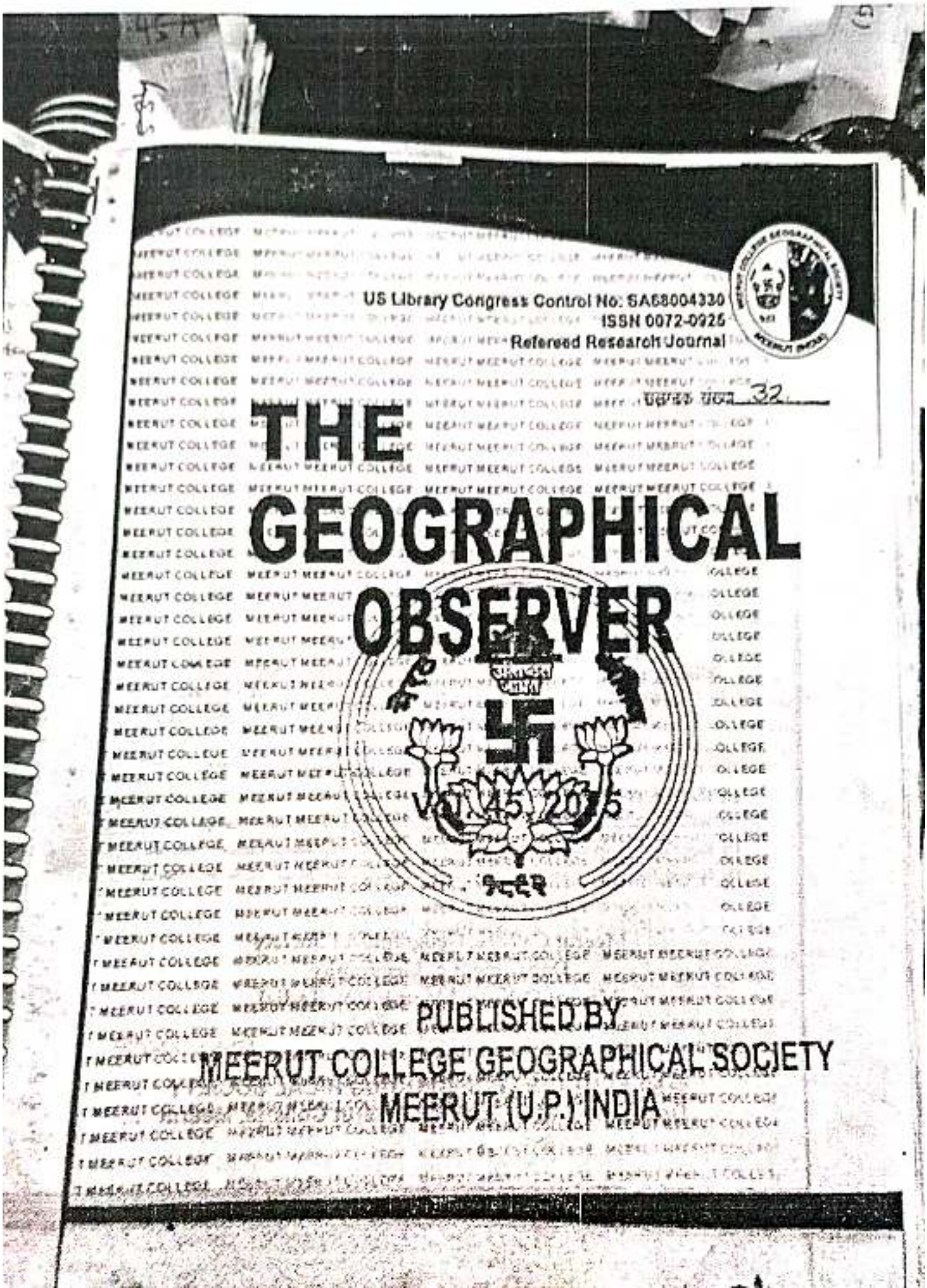

Contents

	Acknowledgemen	1
1	Economic Dynamics of Child Labour in India *Shubhi Sexena*	10
2.	Water Quality and its Effects on Human Health in Asansol City, West Bengal, India *Dr. Shweta & Suma Mali*	23
3.	Literacy Pattern in Uttar Pradesh: An Inter-District Analysis *Dr. Neeraj Tomar*	29
4.	Temporal and Regional Analyses of Slums' Growth in Meerut City *Dr. Devshikha Sharma & Ravi Rani*	37
5.	A Study of "Kidnapping & Abduction – Offences Against Security" in Ghaziabad City *Dr. Anita Malik*	47
6.	Demographic Changes and Growth of Population in Uttar Pradesh: Trends and Observations *Dr. Neeraj Tomar & Dr. Megha Chaudhary*	56
7.	Plastic Pollution and Damage to Sea Environment *Dr. Nupur Shukunta Mudgal*	65
8.	Trends of Urbanization and Urban Problems in Muzaffarnagar City of Uttar Pradesh *Dr. Swati Thakur*	73
9.	Role of Tourism in the Development of Urban Areas of Bodhgaya District *Arvind Kumar Prince & Dr. Veerendra Kumar*	85
10.	The Impact of Urbanization on the Ratio of Urban Females (Sex Ratio) in Western Uttar Pradesh (1971-2011) *Dr. Anita Malik & Dr. S.C. Bansal*	

...AND ACCREDITATION COUNCIL
...Autonomous Institution of the University Grants Commission

4

Temporal and Regional Analyses of Slums' Growth in Meerut City

Dr. Deepshikha Sharma & Rajni Rani***

Abstract

Present paper analyses the temporal and regional aspects of slums' growth in Meerut City. Temporal growth of slums in the paper is analyzed with the help of secondary data and regional aspects i.e. Age wise regional variation and notified and non-notified slums, are studied using primary and secondary both the data. The paper high lights three phases of slum growth between 1950 to 2011 and a noticeable regional variations of slums' category (Notified and Non Notified) and Age.

Keywords: Decadal Growth, Growth rate, Slums' Age, Notifications of Slums.

Introduction

The word 'slum' is often used to describe informal settlements with-in cites that have inadequate housing and miserable living conditions. These are often over crowded, with many people crammed into very small living spaces. Slums are not a new phenomenon. These are developed parallel to the growth of all cities, particularly during the phase of Urbanization and Industrialization. A slum is defined as area where the buildings, are unfit for human habitation due to dilapidation, overcrowding, faulty arrangement of buildings, streets, lack of ventilation, light or sanitation facilities. Combination of these factors is in a way detrimental to safety, health or morals (Slums improvement and cleatance Act, 1956).

As per the definition of United Nation, Slum is an area that combines to various extents the following characteristics

- Inadequate access to safe water.
- Inadequate access of sanitation and other infrastructure
- Poor structural quality of housing
- Over crowding
- Insecure residential status

*Head and Associate Professor, Department of Geography, R.G. (P.G.) College, Meerut.
**Research Scholar, Department of Geography, R.G. (P.G.) College, Meerut.

2018-19

ISSN 2319-3077

PRAGYA SHIKSHAN SHODH RACHANA

प्रज्ञा शिक्षण शोध रचना

The Half-Yearly Research Journal of Humanities & Social Sciences

A Peer Reviewed Research Journal

UGC APPROVED RESEARCH JOURNAL

RESEARCH JOURNAL NO. 63984

Dr. Sompal Singh
Editor

Dr. Beena Rustagi
Managing Editor

Dr. Ashok Kumar Rustagi
Chief Editor

Vol-II No. 6, July to December 2018

Dr. Subhra Gaur
Geography Department

ISSN 2319-8079

PRAGYA SHIKSHAN SHODH RACHNA

प्रज्ञा शिक्षण शोध रचना

A PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

मानविकी एवं समाज विज्ञान की अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका

E-mail : drakrustagijsh@gmail.com

UGC APPROVED RESEARCH JOURNAL
SERIAL NO. 1596
RESEARCH JOURNAL NO. 63984

Vol. II No. 6

July To December 2018

Dr. Sompal Singh
Editor

Dr. Beena Rustagi
Managing Editor

Dr. A. K. Rustagi
Chief Editor

The Half-Yearly Research Journal of Humanities & Social Sciences

PRAGYA SHIKSHAN SHODH RACHANA

प्रज्ञा शिक्षण शोध रचना

Vol. II No. 6 ISSN 2319-8079 July To December 2018

CONTENTS

EDITORIAL

- सम्पादकीय- उच्च शिक्षा : कैसे बदलेगी तस्वीर..../डॉ. अशोक कुमार रुस्तगी - 9

ARTICLES

01. Changing Dimensions of Security in South Asia/ Dr. Ved Prakash- 11
02. Impact of Open and Distance Learning on Human Development/Dr. Mohan Sharma- 19
03. Role of Information Technology in Marketing/ Tripti Singh, Dr. Deepti Gupta- 26
04. Gender Equality and Development in India/ Dr. Saraswati- 31
05. A Study in Human Relationship in Henry James Shorter Novel : The Beast in the Jungle/ Dr. Neeraj Kumar Parashari- 34
06. १८५७ की क्रान्ति में बुलन्दशहर के निकटवर्ती क्षेत्र के ग्रामीणों का योगदान/ डॉ. अमित त्यागी- 38
07. कृषि श्रमिकों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति (मुरादाबाद के संदर्भ में)/ गरिमा कौर- 41
08. शिक्षक की भूमिका और दायित्व/ डॉ0 योगेन्द्र सिंह- 44
09. कृषि भूमि उपयोग एवं रोजगार/ डॉ0 योगेन्द्र सिंह- 48
10. दलित महिलायें व मानवाधिकार : एक विश्लेषण/ सरोज मैनीवाल- 51
11. तहसील बिलारी (जनपद मुरादाबाद) में प्रजनन दर को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन/ अनुज कुमार त्यागी, डॉ. नीना गुप्ता- 55
12. धर्म व राजनीति के अंतर्संबंध में इस्लाम का ऐतिहासिक समाजशास्त्रीय अध्ययन/ महेन्द्र सिंह त्यागी- 61
13. भारतीय विदेश नीति में अमेरिका, रूस का विकल्प नहीं भारत-रूस द्विपक्षीय सम्बन्धों के विशेष सन्दर्भ में)/ डॉ0 प्रेमलता पाण्डेय- 70
14. Portrayal of Terrorism in Media/ Dr. Manoj Kumar Srivastava- 83
15. A Study of Training and Development Strategies for Customer Service in Insurance Sector (A Comparative Study of LIC of India and ICICI Prudential Life Insurance)/ Dr. Shweta Sharma- 89
16. महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता/ डॉ0 रचना शुक्ला, डॉ0 सुरेन्द्र

कुमार- 113
17. शिक्षा और नैतिकता पर वैदिक चिन्तन : आधुनिक सन्दर्भ में/ सोमेन्द्र सिंह- 119
18. नई सदी का भारत- सामाजिक व्यवस्था विकास एवं परिवर्तन/ अमित कुमार- 123
19. नव आर्थिक नीतियों की प्रासंगिकता/ कलक- 127
20. भारत में संविधानवाद के प्रवर्तन में उच्चतम न्यायालय की भूमिका/ डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार सिंह- 132
21. Emerson As A Scholar and True Thinker/ Dr. Jyoti Vishnoi- 141
22. A.K. Ramanujan's Second Volume-Relations/ Dr. Simmi Agarwal- 145
23. महात्मा गांधी की दृष्टि में स्त्री/ डॉ0 ममता यादव- 148
24. Is Bertrand Russell- A Utopian?/ Dr. Dipti Maheshwari, Dr. P.K. Jain- 156
25. E-Commerce in India-Opportunities and Challenges/ Dr. Deepak Agarwal- 165
26. भारतीय विदेश-नीति के निर्माता थे पं० नेहरू/ डॉ0 रोहताश अग्रवाल- 170
27. बिजनौर जनपद के कृषि क्षेत्र विन्यास का भौगोलिक अध्ययन/ डॉ0 सुषमा गौड़- 184
28. दूरदर्शन (टी०वी०) एवं किशोर-किशोरियां/ डॉ0 (श्रीमती) भावना अरोड़ा, डॉ0 जकिया एकत- 191
29. घरेलू तथा कामकाजी महिलाओं के व्यक्तित्व का अध्ययन/ नीतू शर्मा, डॉ0 एस0सी0 शंखधार- 206
30. SUBSCRIPTION FORM - 210

: ध्यातव्य :

- ☐ किसी भी आलेख में प्रस्तुत विचारों के लिए सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक की सहमति हो, आवश्यक नहीं।
- ☐ शोध आलेख भेजते समय आप स्वयं संतुष्ट हो लें कि उसमें प्रूफ व भाषागत त्रुटियां नहीं हैं तथा सन्दर्भ आदि पूर्णतः ठीक है।
- ☐ आलेख आपकी मौलिक धरोहर है, प्रकाशन के बाद यह हमारी धरोहर है, इनका उपयोग हमारी अनुमति के बिना कोई भी न करे।
- ☐ लेखक अपना पता फोन नम्बर सहित इतना स्पष्ट लिखें कि डाक पहुंचने में किसी भी प्रकार की असुविधा न हो।
- ☐ आप प्रबुद्ध लेखक हैं। लेखन तथ्यात्मक, सारगर्भित, संदर्भयुक्त व समीचीन हो।

धन्यवाद।

Vol. II No. 6 (2018)
ISSN 2319-8079
JULY- DECEMBER 2018

बिजनौर जनपद के कृषि–क्षेत्र–विन्यास का भौगोलिक अध्ययन

डॉ० सुषमा गौड़
असिस्टेंट प्रोफेसर– भूगोल विभाग
आर० जी० (पी०जी०) कॉलेज, मेरठ

कृषि–क्षेत्र–विन्यास सामान्य भूमि उपयोग से सर्वथा भिन्न है। सामान्य भूमि उपयोग में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र के अन्तर्गत भूमि उपयोग की सभी मदों में सम्पूर्ण भूमि का उपयोग लिया जाता है, जबकि इसके विपरीत कृषि विन्यास में केवल कृषि फसलों के अन्तर्गत आने वाली भूमि का अध्ययन किया जाता है। इसी आधार पर जोबरफील महोदय ने कृषि भूमि उपयोग तथा कृषि क्षेत्र विन्यास को भूमि उपयोग की दूसरी अवस्था माना है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि जिस क्षेत्र का कृषि भूमि उपयोग दर्शाया जा रहा है, उसका वास्तविक कृषि क्षेत्र एवं सकल कृषि क्षेत्र का फसलों के अन्तर्गत क्या उपयोग है?

जनपद के कृषि भूमि उपयोग की विशिष्टीकरण के रूप में कृषि क्षेत्र विन्यास अर्थात् कृषि के अन्तर्गत शस्य क्रम गहनता, शुद्ध बोया गया क्षेत्र, कुल फसल क्षेत्र आदि को लिया है। इसका उल्लेख निम्न सारणी (1) में किया गया है।

सारिणी है– 1

पंचवर्षीय योजना से पूर्व जनपद में कृषि क्षेत्र विन्यास 1908–09 – 1950–51

(हे० है० व परिवर्तन प्रतिशत में)

वर्ष	शुद्ध बोया गया क्षेत्र		दो फसली क्षेत्र		कुल बोया गया क्षेत्र		शस्य क्रम गहनता (प्रतिशत में)	
	क्षेत्र	परिवर्तन	क्षेत्र	परिवर्तन	क्षेत्र	परिवर्तन	क्षेत्र	परिवर्तन
1908–09	153443		21496		174534		113.90	
1927–28	195994	+27.73	24504	+14.04	220564	+27.13	112.53	
1940–41	249932	+27.52	40795	+66.08	290727	+31.18	116.53	
1950–51	285033	+14.16	51217	+25.56	336003	+15.78	117.85	
कुल परिवर्तन 1908–1951	+131643	+6500	+29761	+139.04	+161734	+92.49	+3.99	
1905–1951								

स्रोत – निदेशक (कृषि सांख्यिकी), कृषि निदेशालय, उ० प्र०, लखनऊ।

[D:\USHRAT\PSSR\PSSR (Vol.II) No6, Dec18 04.pmd]

Dr. Sushma Gaur (Geography)
(2018-19)

ISSN 0973-7626
RNI : UPBIL/2006/18197

SAMAJ VIGYAN SHODH PATRIKA

The Half-Yearly Research Journal of Social Sciences

UGC APPROVED RESEARCH JOURNAL

[illegible] Sharma, D.Litt.
Chief Editor

[illegible]
Guest Editor

Dr. Ashok Kumar Rustagi
Managing Editor

Vol. 1 (Part-II) No. XLIII (April To September 2018)

Dr. Sushma Gaur
Geography Department

ISSN 0973-7626
RNI : UPBIL/2005/16107

SAMAJ VIGYAN SHODH PATRIKA

समाज विज्ञान शोध पत्रिका

A PEER REVIEWED REFERED RESEARCH JOURNAL

मानविकी एवं समाज विज्ञान की अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका

E-mail : samajvigyanshodhpatrika@gmail.com

UGC APPROVED RESEARCH JOURNAL

RESEARCH JOURNAL NO. 48215

Vol. 1 (Part-II) No. XLIII

April To September 2018

Dr. Virendra Sharma, D.Litt.
Chief Editor

Prof. M.M. Semwal
Guest Editor

Dr. A. K. Rustagi
Managing Editor

The Half-Yearly Research Journal of Humanities & Social Sciences

SAMAJ VIGYAN SHODH PATRIKA

समाज विज्ञान शोध पत्रिका

Vol. 1 (Part-II) No. XLIII April To September 2018

CONTENTS

EDITORIAL

♦ सम्पादकीय- डॉ. ए. के. रुस्तगी - 9

ARTICLES

01. Panchayati Raj Institutions : Challenges and Remedies/ Dr. Aruna Rani Mital- 11
02. Cultural Nationalism of Pandit Deendayal/ Dr. Meenakshi Sharma- 19
03. Enrolment Trends and Awareness of Women Towards Cashless Transction : A Study of IGNOU Regional Centre, Aligarh/ Dr. Bhanu Pratap Singh, Dr. Amit Kumar Srivastava- 25
04. Partition of India and Pakistan : A Reminiscences of Devastation and Destruction/ Dr. Piyushbala- 34
05. प्राण-साधना से सिद्धियों की प्राप्ति एवं वर्तमान में उपादेयता/ डॉ0 अनिलेश कुमार सिंह- 41
06. भारत में बाढ़ आपदा : कारण एवं नियंत्रण के उपाय/ डॉ0 योगेन्द्र सिंह- 46
07. आधुनिक समाज में महिलाओं की स्थिति एवं सुधार के आयाम (बुलन्दशहर जनपद के परिप्रेक्ष्य में)/ राकेश कुमार डॉ0 राकेश गर्ग- 49
08. वेद साहित्य में पर्यावरण संरक्षण/ डॉ0 रीता- 57
09. लोकमान्य तिलक का स्वराज्य दर्शन/ डॉ0 ममता यादव- 61
10. भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों का बहु आयामी चरित्र एवं प्रभाव/ ज्ञान प्रसाद गौतम डॉ0 मनमीत कौर- 68
11. Emotional Intelligence as a Determinant of Mental Health Among College Students of Rohilkhand Reagion/ Priyanka Kaur, Dr. Suneel Chaudhary- 72
12. जनसंख्या वृद्धि एवं वितरण : बांदा जनपद के संदर्भ में/ डॉ0 पुनीत कुमार- 79
13. भारतेन्दुयुगीन हिन्दी साहित्य में आधुनिक चेतना/ डॉ0 अर्चना सिंह- 85
14. जनपद अमरोहा (उत्तर प्रदेश) में जनसंख्या-वृद्धि एवं कृषि-विकास से उत्पन्न पर्यावरणीय समस्यायें/ डॉ0 नीरा चौधरी डॉ0 शीतल देवी डॉ0 अवनीश कुमार- 87
15. औरैया जनपद (उ०प्र०) में जनसंख्या वृद्धि का कृषि विकास पर प्रभाव - एक भौगोलिक अध्ययन/ डॉ0 रोचक चौधरी, डॉ0 दीपक गुप्ता, डॉ0 नीरा चौधरी- 94
16. Environmental and Health Impact of Solid Waste Disposal in India (with effect on household waste, industrial waste & biomedical waste) / Dr. Amar Singh Kanwar, Dr. Sanjay Mehrotra- 101
17. A. K. Ramanojan,s First Volume - The Striders / Dr. Simmi Agarwal- 111
18. Importance of Biomedical Waste Management in Healthcare Sector / Mr. Raman

20. मेरठ जनपद में जनसंख्या तथा अधिवास- कृषि के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन/ डॉ0 अनिल कुमार- 130
21. भारत में लोकतंत्र का ऐतिहासिक परिदृश्य/ वीरेन्द्र सिंह- 136
22. पण्डित नेहरू के समाजवादी विचारों का अध्ययन एवं विश्लेषण/ कु0 पूजा- 139
23. वेदों में यज्ञ का स्वरूप/ डॉ0 धीरज कुमार- 143
24. संयुक्त राष्ट्रसंघ के पर्यावरणीय सम्मेलनों में भारत की सक्रियता/ सचिन कुमार- 146
25. भारतीय निर्वाचन-प्रक्रिया में जाति व सम्प्रदाय की भूमिका- एक समाजशास्त्रीय अध्ययन/ डॉ0 मो0 हारिस- 151
26. तहसील बिलारी (जनपद मुरादाबाद) में प्रजनन दर को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन/ अनुज कुमार त्यागी, डॉ. संजय गुप्ता- 158
27. सहारनपुर नगर (उ.प्र.) के काष्ठकला व हौजरी उद्योग में कार्यरत् बाल-श्रमिकों की शैक्षिक संरचना का उनके अभिभावकों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं तत्परता के सन्दर्भ में अध्ययन/ हरिओम, डॉ. अनुराग यादव, डॉ. सुबोध बाला गुप्ता- 164
28. गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में भारत की भूमिका/ डॉ0 विकास मोहन श्रीवास्तव- 174
29. उर्वशी में नारी का स्वरूप/ वीरेन्द्र कुमार शुक्ला- 178
30. नारी स्वातंत्र्य व सम्मान की दिशा में महर्षि दयानन्द सरस्वती की भूमिका/ डॉ0 शची राजपूत, डॉ0 वीना रस्तोगी- 183
31. दक्षेस में आतंकवाद : एक विवेचनात्मक अध्ययन/ डॉ0 विजय कुमार- 187
32. Ethico-Political Pattern in the Essays of Bertrand Russell/ Dr. Dipti Maheshwari, Dr. P.K. Jain- 193
33. भारतीय लोकतन्त्र के निर्माता व निर्देशक : पं. नेहरू/ डॉ0 रोहतास जमदग्नि- 203
34. A Spatial Pattern of Literacy in Scheduled Caste Female Population of Haryana / Dr. Amita Rani- 209
35. पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का पत्रकारिता में योगदान/ वीरेन्द्र सिंह- 217
36. जनांकिकीय अध्ययन के अन्तर्गत बिजनौर जनपद की साक्षरता का विश्लेषण/ डॉ0 सुषमा गौड़- 222
37. दूरदर्शन (टी.वी.) कार्यक्रमों से उत्पन्न किशोरावस्था की समस्यायें/ डॉ0 (श्रीमती) भावना अरोड़ा, डॉ0 अंकिता रस्तोगी- 225
38. Physical Education and Career Prospects / Dr. Manju- 240
39. SUBSCRIPTION FORM - 243

: आग्रहपूर्ण निवेदन :

- ❑ आप चिन्तनशील लेखक हैं। सत्यम् शिवम् सुन्दरम् आपके लेखन का आधार हो; पर तनावग्रस्त लेखन से आप भी बचें, हमें भी बचाएं।
- ❑ किसी भी लेख में उद्भावित विचारों के लिए सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक की सहमति हो, आवश्यक नहीं।
- ❑ शोधलेख भेजते समय आप स्वयं संतुष्ट हो लें कि उसमें प्रूफ व भाषागत त्रुटियां नहीं हैं तथा सन्दर्भ आदि पूर्णतः ठीक हैं।
- ❑ लेख आपकी मौलिक धरोहर हैं, प्रकाशन के बाद ये हमारी धरोहर हैं, इनका उपयोग हमारी अनुमति के बिना कोई भी न करे।
- ❑ लेखक अपना पता इतना स्पष्ट लिखें, ताकि डाक पहुंचने में कोई असुविधा न हो। साथ ही, अपना फोन नंबर अवश्य लिखें, ताकि आवश्यकता पड़ने पर संपर्क किया जा सके।

धन्यवाद!

Dr. Deepshikha Sharma (Geography)

Samaj Vigyan Shodh Patrika

Vol. I (Part-II) No. XLIII (2018)
ISSN 0973-7626
RNI: UPBIL/2005/16107
APRIL - SEPTEMBER 2018

जनांकिकीय अध्ययन के अन्तर्गत बिजनौर जनपद की साक्षरता का विश्लेषण

डॉ0 सुषमा गौड़
असिस्टेंट प्रोफेसर– भूगोल विभाग
आर0जी0 (पी0जी0) कॉलिज, मेरठ

मानव–संसाधन की दृष्टि से साक्षरता, जनसंख्या का एक ऐसा सामाजिक पक्ष है, जिसके आधार पर विकास का मापदण्ड निश्चित किया जा सकता है। भूगोलविदों के लिए साक्षरता, जनसंख्या का एक सामाजिक पक्ष होते हुए भी ऐसा गुणात्मक तथ्य है, जो क्षेत्रीय आधार पर परिवर्तनशील, सामाजिक, आर्थिक प्रवृत्तियों की ओर प्रत्यक्ष रूप से संकेत करती है। वस्तुतः साक्षरता के विकास से मनुष्य सीमित परिवेश से बाहर निकलकर अपने क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रवृत्तियों से अन्योन्याश्रित संबंध स्थापित कर लेता है।

विश्व–स्तर पर यद्यपि साक्षरता को परिभाषित करने के लिए अलग मानदण्डों का प्रयोग किया गया है, परन्तु भारत में 1951 की जनगणना के अनुसार साक्षर व्यक्ति का तात्पर्य 4 वर्ष से ऊपर आयु वाले ऐसे व्यक्ति से है, जो कम से कम साधारण पत्र पढ़ सके। वर्तमान में अनेक भाषा–भाषी देश भारत में एक ही भाषा में साधारण संवाद को समझ लेने, पढ़ लेने और लिख लेने को साक्षरता मानते हैं। प्रसिद्ध विद्वान किंग्स्ले डेविस ने साक्षरता के महत्व को इस प्रकार व्यक्त किया– 'किसी भी राष्ट्र के भावी आर्थिक–विकास तथा साक्षरता प्रसार में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। यदि किसी राष्ट्र में साक्षरता प्रसार की दर निम्न है, तो यह उस देश के आर्थिक विकास में बाधा बन सकती है, जबकि साक्षरता प्रसार की उच्च दर देश के भावी आर्थिक विकास के लिए एक वरदान साबित होती है।" संयुक्त राष्ट्रसंघ की परिभाषा के अनुसार– "किसी भाषा में एक साधारण संदेश को पढ़ने व लिखने की क्षमता रखने वाले सभी व्यक्तियों को साक्षर की श्रेणी में रखा जा सकता है।"

जनपद बिजनौर में साक्षरता के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में यदि अध्ययन करें, तो पता चलता है कि 1961 में जहाँ 17.66 प्रतिशत साक्षरता थी, वहीं पुरुष 26.11% तथा स्त्रियाँ 8.02% साक्षर थीं, जबकि उत्तर प्रदेश में कुल साक्षरता प्रतिशत 20.87 थी, जिसमें पुरुष 32.06% और स्त्रियाँ 8.36% तक साक्षरता की श्रेणी में आते थे। 1961 में भारत में साक्षरता प्रतिशत जनपद बिजनौर तथा उत्तर प्रदेश की तुलना में 28.30% थी, जिसमें पुरुषों में 40.40% तथा स्त्रियों में साक्षरता का यह प्रतिशत 15.35% था। जनपद बिजनौर में 1961 से 2001 के मध्य साक्षरता को सारणी–1 द्वारा समझा जा सकता है।

1961 से 2001 तक कुल साक्षरता में पुरुषों की साक्षरता दर का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि भारत, उत्तर प्रदेश और बिजनौर की

Certificate of Publication

EPRA International Journal of Economic and Business Review

ISSN (Online) : 2347-9671 ISSN (Print): 2349-0187

Impact Factor: (SJIF 2017):7.144, ICV(2016):61.33

Is hereby honoring this certificate to

Dr. Deepshikha Sharma

In Recognition of the publication of Paper entitled

VULNERABILITY ASSESSMENT AND MEASURES OF RISK REDUCTION OF CHAR DHAM YATRA IN UTTARAKHAND

Published under Paper Index EW201804-01-002442

Volume 6 , *Issue* 3 , March, 2018

Dr. A. Singaraj
Chief Editor

Generated on : 30-Apr-2018 11:37 pm
www.eprawisdom.com
Post Box 7036, Tiruchirappalli 620 009, Tamil Nadu, India.
E-mail : chiefeditor@eprawisdom.com

EPRA

संलग्नक संख्या 42

Research Paper | Volume - 6, Issue- 3, March 2018 | e-ISSN : 2347 - 9671| p- ISSN : 2349 - 0187

EPRA International Journal of Economic and Business Review

VULNERABILITY ASSESSMENT AND MEASURES OF RISK REDUCTION OF CHAR DHAM YATRA IN UTTARAKHAND

Dr. Deepshikha Sharma

Associate Professor, Department of Geography, Raghunath Girls' (P.G.) College, Meerut, Uttar Pradesh, India

KEYWORDS:
Char Dham Yatra, Pilgrimage, Moksha Yatra, Risk Reduction, Vulnerability Assessment

ABSTRACT

'Char Dham Yatra' of Uttarakhand state is the most renowned and holy pilgrimage of Hindu culture. This consists of four pilgrimage sites i.e. Yamunotri, Gangotri, Kedarnath and Badrinath. All these holy destinations are situated in the most vulnerable areas of the State where incidences of cloudburst, flood, earthquake and forest fire are common.

Present paper attempts to analyse the impact of natural disaster on Char Dham Yatra (Chhota Char Dham Yatra). The State is divided in four zones on the bases of the intensity of vulnerability, which is derived by considering incidences of natural disasters for the past twenty years and the climatic information from NATMO. Measuring the proportion of the route passing through the different risk zones also assesses vulnerability pilgrimage route. The paper also suggests measures of risk reduction so that people of all the age groups can complete this holy pilgrimage without inconvenience.

INTRODUCTION

Uttarakhand was formed on 9th November 2000 as the 27th State of India, when it was carved out of northern Uttar Pradesh. Located at the foothills of the Himalayan mountain ranges, it is largely a hilly State, having international boundaries with China (Tibet) in the north and Nepal in the east. On its northwest lies Himachal Pradesh, while on the south is Uttar Pradesh. It is rich in natural resources especially water and forests with many glaciers, rivers, dense forests and snow-clad mountain peaks which create pro tourism environment in the State.

Char Dham, the four most sacred and revered Hindu temples of Badrinath, Kedarnath, Gangotri and Yamunotri along with nearly 333 religious sites i.e. 183 temples, 83 religious fairs, 72 Gurudwara ashrams and tapasthali, 161 Taal/ Kund, 16 pilgrimage tours, 32 Shaktipeeth, 11 caves, 12 Shilayan (holy stones), are nestled in the mighty mountains creating a supportive environment to develop pilgrimage tourism here. Besides these some popular pilgrimage tours also contribute to create religious environment in the State. These tours are: Kailash Mansarovar Yatra, Adi Kailash Yatra, Hill Yatra, Devyatra (Devyatra), Khatling - Rudra Devi Mahayatra, Sahastra Tal - Mahasar Tal Yatra, Panch Kamba - Kedar Yatra, Dev Yatra (Moving Deities), Kanwar Yatra, Nandadevi Raj Jat Yatra and "Char Dham Yatra". Since ages pilgrims have been visiting above-mentioned destinations. "Char Dham Yatra" has been their most preferred pilgrimage, which used to begin on foot from Haridwar. This tour at that time was so difficult that old people used to bid farewell finally in anticipation that they would not come back. For them this was a 'Moksha Yatra'. After the development of transportation facilities this pilgrimage has become convenient.

According to scriptures 'Char Dham Yatra' begins from Yamunotri (Western most of all the four, 3235 Mt.), passes through Gangotri (north, east of Yamunotri, 3200mt.) and Kedarnath (South East of Gangotri, 3581 mt.) and ends at Badrinath (East of Kedarnath, 3133 Mt.). In this way the direction of this tour is 'West to East'. As per the religious belief this pilgrimage is considered complete only when visits and the 'holy dips' at Panch Kedar', 'Panch Badri' and 'Panch Prayag' are done. Therefore above mentioned seven destinations are most preferred spots of every Hindu, who wants to visit there once in his lifetime. Since all these holy destinations are situated in the most vulnerable areas of the State, the life of pilgrims remain at high risk.

Uttarakhand is prone to severe earthquakes, landslides, floods, forest fire, hailstorm, lightening, road accidents, etc. This State falls in the highest seismic risk zones of the country i.e. *Zone* V and IV. In the disaster prone map of the country, this State has attained its position among first five states in respect of natural hazards i.e., earthquakes, flash floods triggered by cloud burst, landslides, avalanches and forest fires etc. These disasters have caused immense loss of property, natural wealth, and human lives.

Pilgrimage tourism of Uttarakhand constitutes more than 60% of the total income from over all tourism...

ISSN : (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
Impact Factor : 6.726(SJIF)

शोधमंथन

A Peer Reviewed & Refereed International Journal

UGC Approved Journal No. 40908

VOL. X | JUNE 2019 | SPECIAL ISSUE - 10

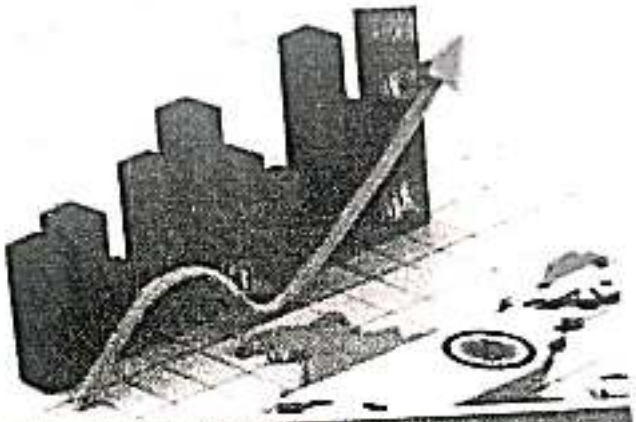

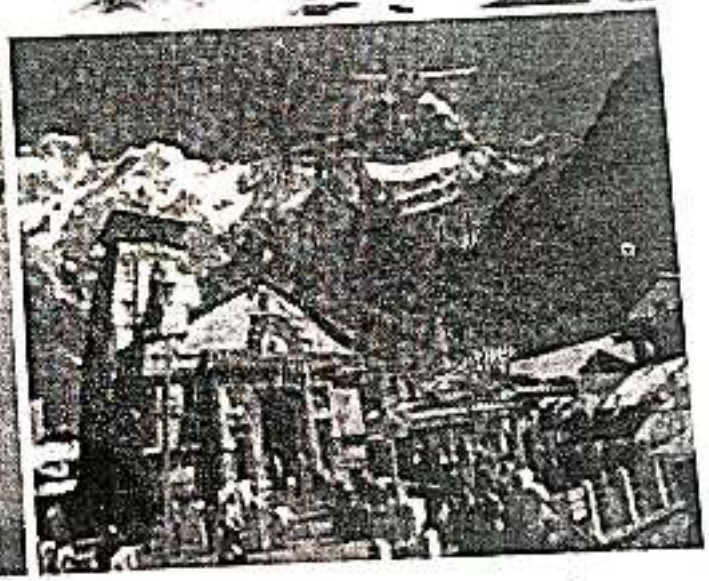

बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारतीय अनुसंधान

अतिथि मुख्य संपादक
डॉ. अवनीश कुमार उपाध्याय

अतिथि संपादक
डॉ. अमित अग्रवाल
डॉ. संजय कुमार

अनुक्रमणिका

इवल्यूऐशन ऑफ वर्चुअल क्लासेस एण्ड वर्चुअल लैब इन हायर एजुकेशन
[illegible]

- रोजगार सृजन में खादी ग्रामोद्योग की भूमिका (जनपद अल्मोड़ा के विशेष सन्दर्भ में) 1
  अलका कोहली
- जैन धर्म–जीवन की एक विशुद्ध पद्धति 4
  डॉ० आमिर सलीम
- वोटर (मतदाता) सम्बन्धी प्रबन्ध 7
  डॉ० अमित अग्रवाल
- 21वीं शताब्दी में भारत–रूस सम्बन्ध 10
  डॉ० अमित कुमार गुप्ता
- महिला सशक्तिकरण राजनीतिक क्षेत्र में – एक अध्ययन 15
  डॉ० अंजली वर्मा
- कला, मानविकी एवं तकनीक 18
  डॉ० अर्चना रानी, शिवानी राठी (शोधार्थी)
- वैश्वीकरण का महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार पर प्रभाव विशेषतया उत्तराखण्ड राज्य के सन्दर्भ में 23
  डॉ० अर्चना त्रिपाठी
- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना की प्रासंगिकता 27
  डॉ० आशा राना, कमल कान्त जोशी
- संगीत और मनोविज्ञान का चिकित्सकीय स्वरूप कुमाऊँनी जागर के संदर्भ 33
  अशोक चन्द्र टम्टा (शोधार्थी),
- हवाई हमले(एयर स्ट्राइक)/सर्जिकल स्ट्राइक अभियान द्वारा सीमापार आतंकवाद पर नियंत्रण 37
  डॉ० अवनीश कुमार उपाध्याय
- इतिहास में तीर्थाटन एवं पर्यटन (उत्तराखण्ड के परिप्रेक्ष्य में) 40
  डॉ० भारत सिंह
- औद्योगिक श्रमिकों की आर्थिक एवं सामाजिक दशाओं का एक अध्ययन 43
  (जनपद ऊधमसिंहनगर की जनांकिकीय आदि विशेषताओं के विशेष संदर्भ में)
  डॉ० चन्द्र प्रकाश वर्मा, अमित अग्रवाल
- राजी जनजाति का परिचयात्मक विवरण 45
  डॉ० दर्शन [illegible]
- दयानंद सरस्वती के चिंतन में राष्ट्रवादी दृष्टिकोण का वर्तमान परिपेक्ष्य मे एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 51
  दीपक चन्द्र, प्रो० हिमांशु बौड़ाई
- पर्यावरण और जल संरक्षण 54
  [illegible] कुमार
- महाभारत में वर्णित वानस्पतिक जीव-जगत 59
  [illegible] सिंह
- ग्रामीण युवकों को रोजगारपरक बनाने में कौशल विकास की भूमिका 63
  डॉ० [illegible] शर्मा
- पंचायती राज व्यवस्था में ई गवर्नेंस की भूमिका 68
  [illegible]
- बैंकों का पुनीकरण क्यों ? (एस०बी०आई० बनाम आई०सी०आई०सी०आई०) 71
  [illegible] सिंह, डॉ० [illegible] कुमार

74

कला, मानविकी एवं तकनीक

डॉ० अर्चना रानी
विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर
ड्राइंग एवं पेंटिंग विभाग
शिवानी राठी (शोधार्थी)
आर०जी० (पी०जी०) कॉलेज
मेरठ (उत्तर प्रदेश)

कला एवं मानविकी को मनुष्य के लिए उपलब्ध ज्ञान के सबसे पुराने क्षेत्रों में से माना जाता है। दोनों के बीच अंतर अधिकांशतः अस्पष्टता के साथ देखा जाता है। जहाँ एक ओर कला को अधिक समावेशी क्षेत्र के रूप में देखा जाता है, वहीं दूसरी ओर मानविकी, साहित्य से लेकर राजनीतिक इतिहास तक के विविध और असंबद्ध पहलुओं (रूपों) को समाहित किये हुए है। कला, परोपकार की जननी है – यदि विश्लेषणात्मक रूप से अध्ययन किया जाये तो हम पायेंगे की सम्पूर्ण पृथ्वी पर मनुष्य के अस्तित्व का इतिहास कला के द्वारा ही सारगर्भित हुआ है। कला इस सम्पूर्ण विश्व की सर्जना शक्ति होने के साथ ही सृष्टि के प्रत्येक कण में व्याप्त है। कला अनन्तरूपा है और कला के इन अनन्त रूपों की अभिव्यक्ति एवं निष्पत्ति का आधार स्वंय परमेश्वर है। परमेश्वर एक ऐसा कलाकार है जिसके द्वारा सृजित की गयी सृष्टि की कलाकार सदैव अनुकृति करता आया है। परमेश्वर ने जिस प्रकार सम्पूर्ण सृष्टि में कला की विविधता एवं सुन्दरता का सृजन किया है वह अन्यत्र ही कोई कलाकार कदापि कर पाता। सम्पूर्ण सृष्टि में प्रत्येक जीव–जन्तु, पेड़–पौधे आदि के रूप में जो प्राकृतिक कलाएं हमारे समक्ष विद्यमान है वह अन्यत्र किसी कलाकार की कला में दृष्टिगत नहीं होती है।

शब्द संकेत – कला, मानविकी, कम्प्यूटर कला, अभिव्यक्ति, सृष्टि, अनुकृति, सृजन, संस्कृति

कला, ईश्वर द्वारा सृजित प्रकृति के अविस्मरणीय रूप में प्रत्येक स्थान पर विद्यमान है। ईश्वर को सर्वप्रथम एवं सर्वश्रेष्ठ कला स्रष्टा माना जाता है। प्रकृति की रचना के रूप में ईश्वर ने पेड़–पौधों, वनस्पतियों, पशु–पक्षी आदि अनेक प्राकृतिक रूपों की रचना की है। ईश्वर के पश्चात पृथ्वी पर कला के सृजन का दायित्व मानव ने सभाला एवं प्राचीन काल से ही अपनी कलात्मक क्षमताओं के अनुसार कला का निर्माण आरम्भ किया जो हमें प्रागैतिहासिक कालीन गुफा चित्रों के रूप में दिखायी देता है। वहीं दूसरी ओर मानविकी को मानव अनुभवों को संसाधित करने के रूप में वर्णित किया जाता है। जब से मनुष्य सक्षम हुए है, तभी से सृष्टि को समझने और रिकॉर्ड करने के लिए दर्शन, साहित्य, धर्म, कला, संगीत, इतिहास और भाषा का उपयोग किया है। जिनमें कला सर्वाधिक सशक्त माध्यम के रूप में विद्यमान है क्योंकि कला के द्वारा कलाकार अपनी विचाराभिव्यक्ति, अत्याधिक सहज रूप में अन्य व्यक्तियों तक पहुँचा सकता है जो हमें प्रागैतिहासिक कालीन चित्रों से भी दृष्टिगत होता है। अभिव्यक्ति के ये तरीके कुछ ऐसे विषय बन गये है जो पारम्परिक रूप से मानविकी छतरी के नीचे आते है। मानव अनुभव के इन अभिलेखों का ज्ञान हमें उन लोगों से जुड़ने की भावना को महसूस करने का अवसर देता है जो हमारे समक्ष उपलब्ध है।

जैसे–जैसे मानव का विकास होता गया वैसे–वैसे ही कलाओं एवं तकनीक का भी विकास होता गया। सम्पूर्ण विश्व में बढ़ते तकनीकी के प्रभाव ने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका बनानी आरम्भ कर दी जिससे कला एवं मानविकी कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रह सका। सन 1970 के दशक में कला के क्षेत्र में तकनीकी क्रान्ति के आगमन ने पारम्परिक कला के सम्मुख कला की एक नवीन तकनीक कम्प्यूटर कला को जन्म दिया। तकनीक के इस आरम्भिक दौर में कला का यह नवीन रूप अधिक लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध नहीं हो पाया किन्तु धीरे–धीरे नवीन समकालीन कलाकारों की नित नवीन प्रयोग करने की जिज्ञासा ने उन्हें कला का एक नवीन मार्ग उपलब्ध कराया तथा वैश्विक तकनीकी क्रान्ति के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के अवसर प्रदान किये।

आज कला के विभिन्न रूप एवं तकनीक हमारे समक्ष विद्यमान है जिनमें कम्प्यूटर कला सर्वाधिक नवीन एवं सशक्त माध्यम के रूप में विकसित हुई है तथा एक नवीन परिदृश्य के रूप में समकालीन कलाकारों के मध्य क्रियाशील है। कम्प्यूटर कला, कला का एक ऐसा माध्यम है जो प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक जीवन को किसी न किसी रूप में अपने साथ जोड़े हुए है। तकनीक से अभिभूत इस संसार में कम्प्यूटर कला का वर्चस्व प्रत्येक स्थान पर दृष्टिगत होता है। तकनीक से परिपूर्ण इस कला का विस्तृत विवेचन इस प्रकार है:-

ग्राफिक कला की तकनीक का मुख्यतः कम्प्यूटर कला के नाम से जाना जाता है या कला की कोई भी वह तकनीक जिसमें कम्प्यूटर की भूमिका निहित हो कम्प्यूटर कला के रूप में जानी जाती है। कम्प्यूटर कला की विस्तृत परिभाषा में पारम्परिक विधाओं को भी शामिल किया जाता है जो कम्प्यूटर का उपयोग करते है। उदाहरणतया कम्प्यूटर कला, काइनेटिक आर्ट (विशेष रूप से मूर्तिकला) या कम्प्यूटर–जनरेटेड पेंटिंग (कम्प्यूटरीकृत डिजाइन वास्तुकला) आदि के समकक्ष रूपों को समाहित करता है। प्रत्येक रूप

[illegible] कला का [illegible] प्रकार है [illegible] कम्प्यूटर [illegible] कला परम्परागत कला की [illegible] से [illegible] है [illegible] (Conceptualism) [illegible] कम्प्यूटर कला [illegible] अधिक [illegible] है।

सन् 1950 की शुरुआत से जब सर्वप्रथम कम्प्यूटर कला का आरम्भिक रूप सामने आया [illegible] यह वास्तव में कला है? कम्प्यूटर कला की शुरुआत के साथ ही [illegible] कम्प्यूटर कला पर [illegible] जैसे-जैसे तकनीक [illegible] और उनकी कलाकृतियों का [illegible] और [illegible] कला की दुनिया में [illegible] डिजिटल आर्ट या न्यू मीडिया आर्ट के रूप में भी [illegible] किया जाता है क्योंकि [illegible] या मौलिक रूप में स्वीकृत किया जाता है। कम्प्यूटर कला के प्रसिद्ध कलाकारों में [illegible] अमेरिकी कलाकार [illegible] (b. 1917) जो [illegible] अमूर्त और [illegible] अमूर्त (Lyrical Abstraction) [illegible] है। [illegible] (1920–99) और [illegible] मुख्यतः [illegible] कला और [illegible]

सर्वप्रथम सन् 1960 के दशक में कलाकारों ने कम्प्यूटर के साथ नवीन प्रयोग आरम्भ किए। [illegible] गैलरी (Howard Wise Gallery) में कम्प्यूटरीकृत चित्रों को प्रदर्शित किया गया। इसके पश्चात् सन् 1968 में [illegible] कला संस्थान में वृहद स्तर पर (Ybernetic Seredempity) नामक कम्प्यूटर कलाकृतियों की प्रदर्शनी [illegible] निर्मित कलाकृतियाँ अधिकतर रेखीय और ज्यामितीय आकृतियों का [illegible] (RANDOM) [illegible] है।

सन् 1970 में [illegible] पेन और STYLUS के आगमन के पश्चात् कम्प्यूटर कला के विकास का नवीन [illegible] एक डिजिटल पेन था जिसके द्वारा कलाकार मॉनीटर पर अधिक रचनात्मकता के साथ [illegible] का प्रयोग [illegible] (b. 1937) और ब्रिटिश कलाकार रिचर्ड हैमिल्टन (1922–2011) ने किया [illegible] ने Quantel Paint Box System का प्रयोग किया अपने 1956 [illegible] को [illegible] (Manipulate) [illegible]

कम्प्यूटर आर्ट केवल चित्र को निर्मित करने की कला नहीं है। किसी भी चित्र [illegible] निर्माण में कम्प्यूटर [illegible] किया गया हो कम्प्यूटर कला की परिधि में समाहित किया जाता है। उदाहरण के लिए Harold Cohen (b. 1928) [illegible] चित्र जो मुख्यतः कम्प्यूटर द्वारा निर्मित थी तथा बाद में उन कलाकृतियों में हस्तगत (by hand) रंग [illegible] [illegible] कला आंदोलन की [illegible] में भी किया गया।

जैसे-जैसे तकनीक एवं सॉफ्टवेयर का विकास आरम्भ हुआ वैसे ही कम्प्यूटर कला के [illegible] यूनाइटेड स्टेट, यूरोप और नीदरलैण्ड में फैले Copy Art Movement (कॉपी कला आंदोलन 1976–86) [illegible] [illegible] बढ़ावा दिया। सन् 1980 और सन् 1990 के दशक में कम्प्यूटर कला में इंटरएक्टिव शब्द का [illegible] शुरू किया जो वास्तविक और आभासी दुनिया के बीच इंटरफेस में दर्शक और कलाकार दोनों को [illegible] टूल की सहायता से कलाकारों ने चित्रों के वास्तविक रूप को अपनी कलात्मकता के माध्यम से कलाकृतियों [illegible] पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। सन् 1982 में एडोब कम्पनी द्वारा विकसित [illegible] ड्राइंग प्रोग्राम [illegible] कलाकार द्वारा और भी अधिक सरल हो गया। यह सॉफ्टवेयर आज भी कम्प्यूटर कलाकारों द्वारा [illegible] [illegible] में से एक है। इसके साथ ही फोटोशॉप जैसे सॉफ्टवेयर प्रोग्राम के साथ [illegible] कलाकारों एवं दर्शकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। सॉफ्टवेयर के साथ [illegible] द्वारा डिजिटल [illegible] को प्रभावित किया है। 21वीं सदी के कलाकार अधिकांशतः एप्पल कम्पनी के कम्प्यूटर [illegible] हार्डवेयर के [illegible] मुख्य कारण आईपैड और टच स्क्रीन तकनीक की लोकप्रियता है एवं सुगमता है [illegible] को सुलभ बनाता है।

कम्प्यूटर कला एवं पारम्परिक ललित कला (पेंटिंग, ड्राइंग और मूर्तिकला) को आमतौर पर एक दूसरे [illegible] में देखा जाता था इसका मुख्य कारण इन कलाओं में [illegible] उत्पादन [illegible] है। डिजिटल [illegible] से बड़े पैमाने पर उत्पादित की जा सकती है। कम्प्यूटरीकृत [illegible] तकनीक का उपयोग करके [illegible] सम्भव है वहीं दूसरी ओर पारम्परिक कला आमतौर पर अधिक समय लेने वाली होती है जबकि पारम्परिक [illegible] जा सकता है जैसा कि कम्प्यूटर चित्रण में है।

ISSN : (P) 0976-5255
(e) 2454-339X
Impact Factor : 5.463(SJIF)

SHODHMANTHAN

A Peer Reviewed & Refereed International Journal

UGC Approved Journal No. 40908

VOL. X

SPECIAL ISSUE - 5, 2019

DIGITALIZATION IN INDIA : THE WAY TO KNOWLEDGE ECONOMY

Editor:
Dr. Abhai Kumar Mital

Co Editor:
Dr. Manish Kumar Gupta

CONTENT

- TECHNOLOGY AND MUSIC – AN UNUSUAL COUPLE
  Dr. Abha Agarwal — 1
- LEARNING TECHNOLOGY EFFECTIVENESS IN PRIMARY, SECONDARY AND HIGHER EDUCATION
  Dr. Anil Kumar — 4
- DIRECT BENEFIT TRANSFERS: A DIGITALISED PERSPECTIVE
  Apoorva Agarwal — 8
- DIGITAL PAINTING – A NEW FORM OF VISUAL ART
  Dr. Archana Rani — 15
- NATIONAL HOUSING BANK RESIDENTIAL INDEX
  Gaurav Mahendra — 19
- A STUDY OF NPCI —WITH SPECIAL REFERENCE TO BHARAT INTERFACE FOR MONEY (BHIM)
  Jatin Gupta — 25
- DIGITAL LEARNING CENTERS
  Dr. Kaushal Kumar — 32
- IMPACT OF SPIRITUALITY ON CORPORATE MANAGEMENT
  Kiran Bala — 36
- PARTITION OF PAKISTAN (1971) AND CHINA'S REACTION
  Dr. Manoj Kumar — 39
- EFFECTS OF DIGITAL INDIA ON INDIAN ECONOMY
  Dr. Nagachampa Jain, Prof. Nandini — 46
- INFLUENCE OF DIGITALIZATION IN INDIA ON INDIAN RETAIL INDUSTRY
  Dr. Parmil Kumar, Nishant Singh — 60
- EFFECTS OF DIGITAL INDIA ON INDIAN ECONOMY
  Dr. Parmil Kumar — 65
- GROWTH AND PRESENT SCENARIO OF DIGITAL PAYMENTS IN INDIA: AN ANALYTICAL STUDY
  Rahul Nandi, Dr. Pradipta Banerjee — 68
- EFFECTS OF DIGITAL INDIA ON INDIAN ECONOMY
  Dr. Puneet Saxena — 76
- SKILL DEVELOPMENT: OPPORTUNITIES & CHALLENGES IN INDIA
  Dr. Rajiv Kumar Agarwal — 80
- NANOMEDICINES, DRUGS DESIGNING AND DRUG DELIVERY-IN VIEW OF DIGITALIZATION
  Raktika Yadav — 86
- PREMCHAND: A POLE STAR AMONG THE CONTEMPORARY NOVELISTS
  Ravindra Kumar — 89
- DIGITAL REVOLUTION IN THE INDIAN BANKING SECTOR
  Renkesh Kumar, Dr. Parmil Kumar — 92
- KNOWLEDGE ECONOMY FOR GLOBAL DEVELOPMENT
  Dr. Rohtas Yadav — 96
- DIGITALISATION IN INDIAN BANKING SYSTEM - POST DEMONETISATION SCENARIO
  Dr. S. K. Rastogi, Dr. N. U. Khan — 100
- KNOWLEDGE ECONOMY AND DISPARITIES IN THE AGRICULTURAL DEVELOPMENT OF RUDRAPRAYAG DISTRICT OF UTTARAKHAND
  Dr. Saba Zaidi — 109
- CYBER RISKS AND BANKS
  Dr. Bhaskara Kapoor Sanyam — 115
- EFFECTS OF DIGITAL INDIA ON INDIAN ECONOMY
  Dr. Nazia Begum, Dr. Sudhir Gaur — 119
- INDIAN LITERATURE AND DIGITALIZATION
  Dr. Rajkumar Sonkar, Dr. Sandhya Bhatt — 126

Shodhmanthan 2019, Vol.X, Sp. Issue-5, ISSN: (P)0976-5255 (e) 2454-339X (Impact Factor) 5.463 (SJIF)

DIGITAL PAINTING – A NEW FORM OF VISUAL ART

Dr. Archana Rani

Head & Associate Professor: Drawing & Painting Department,
R.G. (PG) College, Meerut [U.P.]

Introduction:

Digital art is technically a renewed version of the visual art, which is perceived as a sub-category of the contemporary art based on digital technology. It has secured a distinctive recognition in the world of art.

Digital art greatly expanded the artist's toolbox from the traditional raw materials into the progressive new realm of electronic technologies. Instead of brush and acrylic, artists could now paint with light, sound, and pixels. Instead of paper, artists could collage with found digital imagery or computer-generated graphics. Instead of physical, two-dimensional canvas, artists could concoct three-dimensional graphic works for projection on screen or via multimedia projection.

The introduction of the 'sketchpad', the first computer drawing system that has given rise to various painting software including Corel, Photo paint, Meta Creations, Painter 3D, Adobe Photoshop and JASC's Paint Shop Pro, that allow computer users to simulate painting on a computer screen. Users also employ a computer mouse or a tablet stylus to simulate various sizes of paintbrush, select colours from a colour palette to retouch photographs, adjust the contrast and the colours of images and add special effects. The result is often an enhancement of the picture quality of the photograph. Thus, In the 1990s, with the application of computer technology, digital painting art was born, its full use of computer science and technology perfect painting art to a new realm, as the darling of the new era, covering many industries such as film, packaging, advertising, comics, animation, games, the Internet and so on. Digital painting art is not only a simple change in the traditional art of painting, but also the perfect fusion of science and technology and the representative of the development of space, large to we cannot imagine.

Today, digital painting is popular in applications ranging from conceptual design for film or computer games to illustration for books or magazines. Digital painter usually paints with a stylus on a graphics tablet, which acts like a pen on a drawing board. Digital painting differs from other forms of computer-generated art in that the artwork is painted stroke by stroke manually instead of being rendered by some computer algorithms. Instead of pulling curves using a mouse, digital painting also keeps the 'manual' feel of the traditional craft.

One may ask why some artists prefer digital over traditional painting. The topmost reasons for going digital given by existing digital artists are to undo and redo strokes; to save on materials expenses and to save artwork at different stages. And the truth is, high-quality paints and papers are expensive. With digital paint, there is virtually no cost for the consumables, and artists no longer have to worry that certain colours being used up in the middle of a painting session. This is just like how the digital camera has allowed people to take casual snapshots without worrying about wasting films.

Although, alike traditional artists, digital artists also experience, feel their surroundings and transform these observations into artistic work. The environment remains the same for digital as well as traditional artist. The only difference is that they use digital technology in expressing their thoughts and imaginations. In doing so the cultural values are also reflected in the artwork in accordance with the artist's personal vision.

Infect, as our culture becomes increasingly digitized, digital artists are successfully progressing in exploring and defining this new culture of art. The wide acceptance and admiration for digital art has created new benchmarks and milestones for Indian digital artists and their worldwide popularity has resulted in the runaway success for many artists. These digital artists are loaded with innovative ideas, ingenious thoughts and technologies to execute these implicit as well as explicit imaginations. Digital artists are proficient in clubbing, art with proper technology and they created many pathways for the aspiring artists. Their works become a topic of discussion in social and cultural circles. Young generations of growing artists across the world are following those digital trendsetters in making their artistic work more attractive and communicable.

The new generation of artists is experimental as well as expressive in blending traditional art forms like drawing, painting, photography, collage with technologically driven art medium like video, graphic and animation. In the modern approach they are impressively creative and rationally sensitive to highlight the complex issues of the present era. The new digital medium equipped them to visualize their ideas and thoughts. They have assimilated in observing the events around them and they are pretty successful in getting the attention of worldwide audiences through their stimulating images. The generation of young and unconventional artists like Sheba Chhahhi, Atul Bhalla, Anita Dube, Vivan Sundaram, Chhatrapati Dutta, Mandeep Singh Manu and Gigi Scaria, uses video, photography and digital technology to make their works more interactive and effective. They have been acclaimed in portraying the sensitive global issues of the world like consumerism inequality, racial discrimination and terrorism with adequate care, sensibility and utmost human responsibility. This class of revolutionary artists initially stores their imaginations on the computer and after adding more value to their thoughts they subsequently transform it into a physical form.

Truth is that traditional art elements and principles are the body and soul of digital art which can be regulated by electronic brushes and tools and allow an artist to adjust colors, themes, textures, shapes in a more desirable and calculated manner, to create an exact replica of the artist's imagination. They also work on some special sets of image creation tools known as plug-ins or filters to modify the screen images which were next to impossible with traditional tools. These tools redefined the fine arts and created a distinct role in this revolutionary art form.

Digital artists have numerous tools that customary artist doesn't possess. Some of these are a virtual palette consisting of millions of colours, almost of any size of canvas or medium and the ability to correct mistakes, as well as erasers, pencils, spray cans, brushes and a variety of 2D and 3D effect tools. Instead of a canvas or sketchbook, digital artists would use a mouse or tablet to display strokes

both traditional and digital art forms are having great and high values with their techniques and skills which make them more precious and popular.

In digital art many works are done by computer programming in which human and its creativity are the most important ingredients and therefore, one who uses the computer program cannot be called as an artist. This practice saves artist to buy costly materials like paint-brush, canvas, colour by spending a huge sum of money. The only requirement is to control the mouse and tablet and to draw on the 'digital canvases' using human creativity and potentials. The artist does not have to wait for drying, cleaning the brushes, mixing the paint. Another advantage of these devices especially in Photoshop is the layers of function by using these functions an artist can divide his painting in different part and different layers in which several changes can be possibly made of single layer without affecting the other parts. Further, computer applications give chance to the creators to Endeavour different styles without employing much more time and labor.

Almost every digital artist has undergone an amazing artistic journey and has carved a niche for himself. They are experimenting with new materials and indigenous elements for innovations in special combinations and unusual treatment has been gaining popularity all around the globe at present. Thus, digital art is a new art form and should retain its new independent character.

The global acceptance and recognition accorded to well known fine art forms such as sculpture, painting and drawing has therefore not been extended to this rather underexplored area of the visual arts, in spite of the popularity of digital art galleries on the world- wide- web [www] as well as some international museums displaying outstanding digital paintings. There is documentary evidence to show that some critics expressed scepticism about the validity of using computer as a multimedia apparatus for executing paintings during its early period of inception in the 1960's. The rejection was based on the premise that the art of painting cannot be done on a computer since the device only generates digital graphical images, which are superficial, without depth and of limited artistic value. To most traditional artists, computer art is solely a technological craft that is informatively and aesthetically deficient. To them computer generated art is for commercial considerations, dull in outlook, lack innovation and quality hence could not be given a place in fine arts. Thus, digital art is not bound by the rules of traditional art; it often simulates it to give the user something familiar and to make the whole process more intuitive for the artist. Early digital painting programs were based on coloring the pixels with a mouse, but today they offer much more: the digital paint blends naturally, can be mixed, and is applied with a special stylus on a graphics tablet.

Conclusion:

To sum up, with the rapid development of computer science and technology, professional painting art field has a revolutionary new breakthrough. In the digital age as the background today, digital art for the art of painting to add new content, expand the broader creative space, and as a new generation of visual art forms, digital painting, art has become the current fashion with the mainstream art of painting, applied to the public. Up to now the art of digital painting is still a new art form to show to the public, its theoretical platform, construction concept is still in the initial stage. This paper discusses the new art form as digital painting and its diversified performance.

[illegible] 2014

Geng Kai. Analysis of digital painting digital art features. Silk Road. 2014

Mitchell. Computer Graphics: The Engineering of Vision and the Aesthetics of Computer Art [illegible]
1996

Zhu Defu. On the relationship between traditional painting and digital painting. Journal of [illegible] Humanities and Social Sciences. 2011

Sawyer S. [illegible] Using Information Technology: A Practical Introduction to Computer & Communications [illegible]
Technology. Education. 5th Edition. 2007

Chi Gengyu. Digital painting art research and practice. Shanghai Artists. 2011

Deng Jianmeng. "Thinking about digital painting innovation". Journal of Beijing Institute of [illegible]
no. 01. 2000

Meng Xiaorui. Painting art extension and development - Digital Art. Fine Arts. 2006

Ashford W. Photoshop Elements Solution: The Art of Digital Photography. [illegible]

Dr. Vandana Agarwal (Music) 2018-19

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता

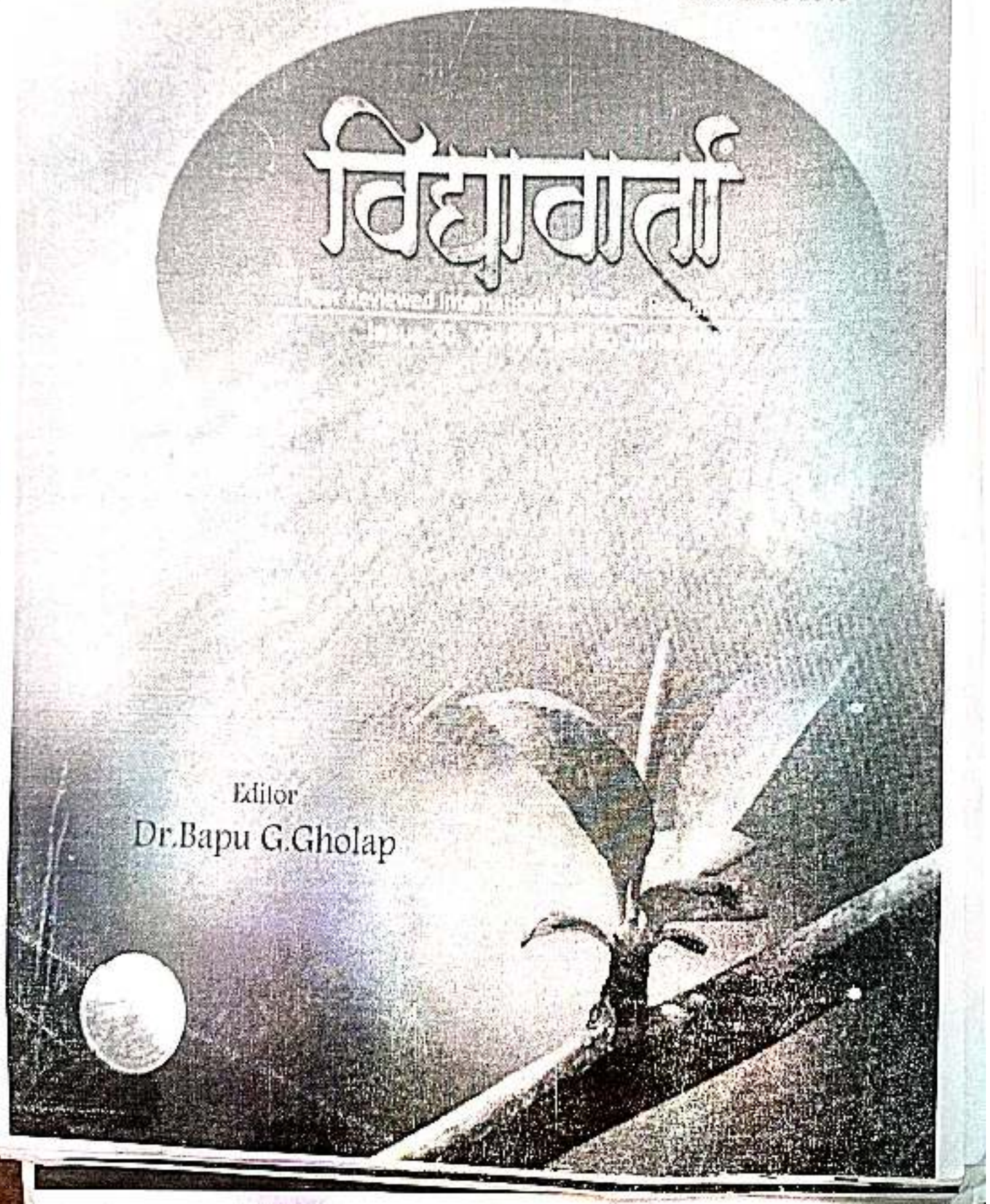

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2019
Issue-30, Vol-03

**Date of Publication
01 May 2019**

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र बीड

Printed by Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post Limbaganesh Dist.Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell [illegible]
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Index

01) The impact of climate change on Business Strategies
Nisha Agrawal, Bhopal MP || 10

02) Menstruation a Social and Traditional Taboo
Dr. Gagan Kumar , Smt. Priyanka Bharti, Sitapur || 12

03) RESERVATION FOR HIGHER CASTES COMMUNITIES IN INDIA .....
Jatavath Hanuma ,Hyderabad || 16

04) Flow of credit to agriculture in India
Prof. Dr. T. P. More,Buldana (MS) || 19

05) ENVIRONMENT AND HEALTH ISSUES OF MARBLE MINING .....
DR. Anju Ojha,DR. M. M.Sheikh, Churu || 23

06) The role of computers in mathematics learning
Anil Kumar Jain , Jaipur || 31

07) Sustainability of Economy and Money laundering
Prof. Dilpreet Kaur,LUDHIANA. || 36

08) Rosie-The Eternal Heroine in R.K. Narayans, The Guide
Asst. Prof.Shikha, Hariana || 43

09) A STATUS OF RURALWOMEN ENTREPRENEURSHIP IN INDIA ....
P. Thangaraj,Dr. P. Loganathan,Namakkal (Dt) || 45

10) Economic Ideas of Mahadev Govind Ranade
Dr. Manjula Upadhyay, Lucknow || 49

11) An over View of Human Right in the Context of History
Vijay Shankar,Sri.Muktsar Sahib. || 55

12) Macrophytes Biodiversity of Sikam Reservoir from Rajura....
S.A. Dhobie, Y.B. Gedam & M.B.Wadekar, Chandrapur || 58

13) Problems of Indian Agriculture Marketing
Prof. Dr. Sangram R. Raghuwanshi, Amravati || 61

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

14) ORIGIN OF THE POLICE
Dr. G. Sanjeevayya, Andhra Pradesh || 64

15) [illegible]
डॉ.घायाळ बाबुराव लक्ष्मणराव,नाशिक || 68

16) [illegible]
प्रा.डॉ. सूर्यकांत हरिश्चंद्र शिंदे,बुलडाणा || 70

17) डोपिंगमुळे खेळाडूंवर होणारे परिणाम आणि उपाययोजना
डॉ.जाधव भरतसिंग रामसिंग,नाशिक || 74

18) [illegible]
प्रा. सौ. संगिता नारायणराव मुंडे, हिंगोली || 76

19) पश्चिम महाराष्ट्र आणि मराठवाडा विभागातील आंतरविद्यापीठ
डॉ.संजय ज्ञानोबा सावंत,कोल्हापूर || 78

20) [illegible] आणि महाराष्ट्रातील [illegible] : एक आकलन
डॉ.एस.डी. सावंत,लातूर || 81

21) [illegible] मानसिक उपयुक्तता
डॉ.प्रतिभा सुधीर पेठकर, कु.अर्चना शंकरराव कोहळे || 87

22) भारतातील उच्च शिक्षण स्वरूप : विवेचन — एक अभ्यास
प्रा.डॉ.उर्मिला शेळके, लातूर || 90

23) विद्यार्थी केंद्रीत महाराष्ट्र सार्वजनिक विद्यापीठ कायदा — २०१६
श्री.संतोष रंगराव शाहपूरकर, कोल्हापूर || 94

24) वडगाव लढाईतील शिवराव पानसे यांची कामगिरी (१७७९)
प्रा.डॉ.भातुसे कारभारी लक्ष्मण,औरंगाबाद || 97

25) अमर्त्य सेन यांचे आर्थिक विचार
प्रा.डॉ.राजेंद्र शिवा बोरसे, लोणार || 99

26) [illegible] निवडणुकीतील माध्यमांची भूमिका व [illegible] आणि ...
गजानन सहादेव उपरीकर, नागपूर || 101

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

[illegible] ||105

[illegible] ||110

[illegible] ||114

[illegible] ||116

[illegible] ||119

[illegible] ||125

[illegible] ||131

[illegible] ||133

[illegible] ||135

[illegible] Scanner [illegible] ||141

[illegible] ||145

[illegible] ||147

[illegible] ||151

40) [illegible] ||153

41) [illegible] ||159

42) [illegible] ||161

43) [illegible] Dr. Alka Nayak, Orai (Jalaun) ||165

44) [illegible] ||172

(Music) 2018-19

MAHMUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta® Peer Reviewed International Journal

April To June 2019
Issue 30, Vol 04

39

ब्रज संस्कृति में संगीत का महत्व

डॉ० [illegible] अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग
[illegible] कॉलेज, [illegible]

किसी भी देश, जाति अथवा समाज की पहचान उसकी संस्कृति होती है। संस्कृति मानव समाज के सर्वांगीण जीवन के निर्माण, [illegible] का [illegible] होता है। किसी भी देश, जाति अथवा समाज की संस्कृति के अन्तर्गत [illegible] परम्परायें, गीत, [illegible], त्यौहार, [illegible], वेशभूषा, [illegible] आदि सभी का समावेश होता है, जिन [illegible] की संस्कृति को एक स्वरूप प्राप्त होता है।

भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत ब्रज संस्कृति का अपना एक विशेष स्थान है अपनी विशिष्टता के कारण ब्रज संस्कृति न केवल भारत में अपितु पूरे विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है इसका प्रमुख कारण है कि ब्रज संस्कृति में त्याग, तपस्या, सेवा, समर्पण, मर्यादा के साथ–साथ सरलता, सरसता, स्वाभाविकता, उल्लास और स्वच्छन्दता का अद्भुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है।

ब्रजभूमि का नाम सुनते ही हमारे मन में उत्तर भारत के एक ऐसे भू–मण्डल का चित्र उभर जाता है, जिसका सम्बन्ध भगवान श्रीकृष्ण और श्री राधा रानी की बाल क्रीड़ाओं और भक्ति परम्परा से रहा है जैसे ही हम ब्रज की बात करते हैं तो वृन्दावन, मथुरा, गोकुल, बरसाना, नन्दगांव हमारी मनोभूमि पर अवतरित होने लगते हैं। अनेकों बांसुरियों की मधुर ध्वनि सुनाई देने लगती है, यमुना की लहरें अठखेलियां करने लगती हैं, गाय–बछिया हुमकती–उछलती दिखाई देने लगते हैं, गोपियां–ग्वाले झूमने लगते हैं।

[illegible] ब्रज संस्कृति में संगीत, नृत्य और कला का [illegible] संस्कृति में [illegible] का जीवन के पूर्ण आनन्द के साथ [illegible] है। ब्रज संस्कृति के [illegible] और [illegible] है। [illegible] ब्रज संस्कृति में साहित्य, संगीत और कला का [illegible] विद्यमान है। [illegible] संगीत की [illegible] करती है। ब्रज भाषा में शास्त्रीय संगीत के पद, ख्याल, ध्रुपद आदि की [illegible] मिलती हैं।

भारत में संगीत कला अपनी प्राचीनता तथा [illegible] के कारण प्रारम्भ से ही धर्म का आधार लेकर विकसित हुई। यहां तक कि संगीत कला को धर्म के साथ जोड़कर इसे मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया। कालान्तर में पुष्टि की [illegible] के आधार में संगीत को [illegible] स्थान के लिए वैष्णवाचार्यों ने 'समाज गान' पद्धति का प्रचलन किया जो ब्रजभूमि की ही देन है। इस पद्धति में भक्तिपरक संगीत में शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद तथा धमार गायकी को प्रमुख स्थान दिया। आत्मा–परमात्मा की अभिन्नता के समान ही भक्ति तथा संगीत का सम्बन्ध है। भक्त और भगवान के मध्य भक्ति का माध्यम संगीत ही है चाहे वह "ओ३म्" का उच्चारण ही क्यों न हो। संगीत कला सदैव से ही कीर्तन, भजन आदि उपासनाओं की सहचरी रही है। श्रीमद्भागवत में भगवान ने स्वयं ही कहा है –

"नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद् भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद:।।"

मानसिक विकारों का त्याग कर भगवत प्रेम की प्राप्ति के लिए जो भजन–कीर्तन किया जाता है वह भक्ति संगीत कहलाता है। संगीत का यह विशेष गुण है कि वह चित्तवृत्तियों को शान्त कर श्रोताओं–रसिकों को

Dr Vandana Agrawal (Music) 2018-19

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta®

Peer Revie... Research Journal

Issu... June 2019

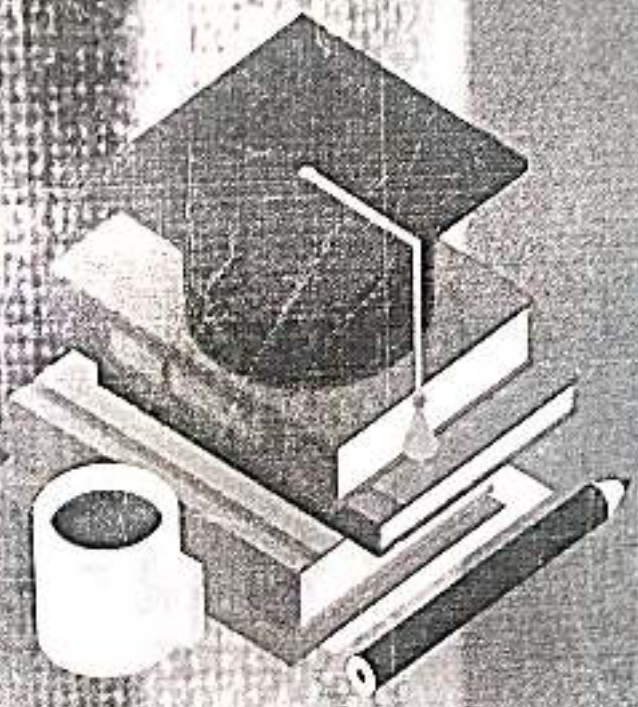

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2019
Issue-30, Vol-05

Date of Publication
01 May 2019

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विठोविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Index

01) "Biodiversity and its Conservation in India" A Geographical Analysis
Dr. Mirza Wajid Rustum Baig, Beed ||10

02) Impact Of Pre and Post Sales Service in Automobile industry" (with special ...
Dr. Neeraj Singh & Mrs. Shweta Fadnavis Dagaonkar, Bhopal ||16

03) Padmashri Kunnakudi Vaidyanathan and Raga Research Centre – A study
Thirumarugal S. Dineshkumar ||19

04) Knowledge Management System: Opportunities and Challenges for Library ...
Dipankar Halder, Panchpota, W.B. ||21

05) Use of ICT in Social Work College Libraries in Maharashtra
Mr. Suresh M. Humane, Chimur ||28

06) WHY DID SREELAKSHMI DIE ? in the novel 'Eating Wasps' by Anita Nair
Dr. Pranjali Kane, Nagpur ||33

07) CONSERVATION OF NATURAL RESOURCES
Dr. R. B. Madale, Dist. Nanded ||37

08) The quest for Identity among various Culture and Tradition in Ladies Coupe
A. Mercy Kiruba Glory, Coimbatore ||40

09) Benefit of yoga forsportsmanperformance
Prof. Vasant T. Ninave, Dist-Nagpur ||43

10) Internet as the Agent of Change
Swati Pareek, Jaipur ||46

11) ENVIRONMENTAL POLICIES – PROBLEMS AND ISSUES
Dr. Patil Bhagwan Shankar, Sangli ||52

12) WOMEN LEADERSHIP IN ORGANIZAITON
Dr. Sou. Parvati Bhagwan Patil, District Kolhapur ||57

13) The Neolithic Culture in India
Dr. H. Ramesh, Nandhikalli, Sondur ||62

14) Semantic web and ontology in library Perspective
S. Bishbariya ||66

15) Pessimism in Desai's cry, the peacock
Mr. Ashish Janardan Bhagat, Dist-Washim ||72

16) Alienation In Relation To Stress Among Adolescents
Jasvir Kaur Grewal, Ludhiana ||74

17) TEACHING EFFECTIVENESS OF SECONDARY SCHOOL TEACHERS IN RELATION TO ...
Dr. Indu Bala Tehlan & Ms.Swati, Rohtak ||78

18) PORTRAYAL OF WOMEN IN PRINTED MEDIA: PSYCHOLOGICAL ANALYSIS
Malavika S. P. & Dr. Subha Sachithanand ||84

19) [illegible] मंदिर : ऐतिहासिक अध्ययन
प्रा. [illegible], वाशिम ||93

20) [illegible] : एक चिंतन
प्रा. डॉ. [illegible], जि. उस्मानाबाद ||95

21) स्वयं सहाय्यता बचत गट आणि महिलांचे आर्थिक व सामाजिक सक्षमीकरण
प्रा. डॉ. प्रदिप एम. [illegible], जि. नागपूर ||100

22) [illegible]
[illegible] ||102

23) [illegible] समस्या व उपाय
प्रा. सतीश आर. [illegible] ||106

24) [illegible]
[illegible], जि. लातूर ||109

25) [illegible] (Importance of Inter – Personal ...
Dr.(Mrs.) Anita V. Mahawadiwar, Bhiwapur ||112

http://www.printingarea.blogspot.com | www.vidyawarta.com/03

26) [illegible]
[illegible], औरंगाबाद ||117

27) [illegible]
डॉ. [illegible], जि. [illegible] ||127

28) [illegible]
[illegible] ||131

29) [illegible] (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)
[illegible], गोंदिया ||133

30) [illegible]
[illegible], जि. कोल्हापुर ||140

31) [illegible]
[illegible], जिल्हा परभणी ||144

32) [illegible]
डॉ. मनीषा अग्रवाल, देहरादून, उत्तराखण्ड ||146

33) [illegible]
डॉ. वन्दना अग्रवाल, मेरठ ||148

34) [illegible] आधुनिक संदर्भ में उपादेयता
[illegible] झा, दुमका, झारखंड ||154

35) [illegible] का विश्लेषण
[illegible], जिला राजनांदगांव(छ.ग.) ||158

36) [illegible]
[illegible], जि. लातूर ||160

37) [illegible] और प्रशिक्षण की आवश्यकता
[illegible] पाल सिंह & डॉ. नवनीत कुमार राजपूत ||164

38) [illegible]
[illegible], कुरुक्षेत्र, हरियाणा ||169

39) [illegible]
[illegible], पटना ||173

40) हिंदी के विकास में [illegible] का योगदान
डॉ. [illegible], जि. लातूर ||177

41) [illegible]
डॉ. [illegible] ||179

42) [illegible] की कविता
[illegible], इलाहाबाद ||182

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

विद्या वार्ता®
YouTube Channel Educational
SHARE
LIKE
COMMENT
SUBSCRIBE

33

सौन्दर्य और ललित कलायें

डॉ० वन्दना अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग,
आर०जी० पी०जी० कॉलेज मेरठ

****

सौन्दर्य के विषय में हम यह कह सकते हैं कि इस सृष्टि की रचना के साथ ही सुन्दरता का भी उद्भव हुआ। क्योंकि यह सर्वमान्य है कि रचना सुन्दरता का और विध्वंसता कुरूपता का परिणाम है परन्तु सौन्दर्य आदि कुछ शब्द ऐसे होते है जो कहने–सुनने में तो अत्यन्त साधारण प्रतीत होते है किन्तु उनकी व्याख्या अथवा अर्थ उतना ही उलझा हुआ होता है जिनके विषय में हम गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में कह सकते है "गगुडो गनहि गन रहिये।" क्योंकि ये शब्द अनुभूति के अधिक समीप है। मानव सदा से ही चिन्तनशील प्राणी रहा है। उसका यह स्वभाव उलझे हुए, गूढ़ से गूढ़ तथ्यों पर भी कुछ न कुछ कहने के लिए उसको व्याकुल करता रहता है जैसा कि गोस्वामी जी ने यह भी कहा है – "तदपि कहे बिन रहा न कोई।" ऐसा माना जाता है कि लगभग २५०० वर्ष पूर्व सर्वप्रथम भारत, चीन तथा बेबीलोन में सौन्दर्य पर चर्चा हुई।

सबसे पहले यह समझना अत्यन्त आवश्यक है कि 'कला' क्या है ? प्रारम्भ काल में जब मानव प्राकृतिक दृश्यों को देखता था, जैसे सूर्योदय, सूर्यास्त, फूलों के विविध रंग आदि तब वह इन सुन्दर दृश्यों को संजोकर रखने के लिए उनको रेखांकित करता था। बिजली की कड़कड़ाहट, बादलों की गर्जना से कभी वह भयभीत हो जाता था तो कभी कोयल की कूक सुनकर वह आत्मविभोर हो नाचने–गाने लगता था। कभी किसी सुन्दर चीज़ को देखकर मिट्टी आदि से उसे बनाने की चेष्टा करता था। इस प्रकार के कार्यों से उसे सन्तुष्टि मिलती थी तथा उसके मन तथा आत्मा का पोषण होता था। मानव की यही क्रियाएं कला कहलायीं।

वस्तुतः मानव भावनाओं की सुन्दर अभिव्यक्ति gh d y k gß "Art in an expression",[1] कला के विषय में आज तक अनेकों विचारकों, विद्वानों आदि ने व्याख्या की है। समय–समय पर कला का प्रयोजन बदला और उसी के अनुसार कला के विषय में विचारकों ने परिभाषा दी। कला की परिभाषा देते समय बहुत से विद्वानों ने विशेषकर भारतीय विद्वानों ने कला को सत्यम्–शिवम्–सुन्दरम् का समन्वय माना है।

भारतीय साहित्य में ६४ प्रकार की कलाओं का वर्णन है। ६४ कलाएँ चारु तथा कारु नामक भेद से विभक्त थीं।[2] कारु के अन्तर्गत उपयोगी कलायें आती थी तथा चारु कला का सम्बन्ध सुन्दरता से था। पाश्चात्य विद्वान हीगल ने सर्वप्रथम ललित कला तथा उपयोगी कला का विभाजन किया। ललित कला के अन्तर्गत वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, काव्यकला एवं संगीत कला आती है।

कवि शिरोमणि कालिदास के अनुसार कला व्यापक आनंद प्रदान करती है। कला के अतिरिक्त और कुछ ऐसा नहीं है जो युवा–वृद्ध, सुखी–दुःखी, रोगी–पीड़ित, सबल–दुर्बल, स्वस्थ–अस्वस्थ सभी को समान रूप से आनंद प्रदान कर सके। कला से प्राप्त आनंद को भारतीय संस्कृति में ब्रह्मानन्द सहोदर कहा गया है –

सत्वोद्रेकादखण्डस्य प्रकाशानन्दचिन्मयः।
वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वादसहोदरः।।[3]

अपने जन्म–काल से ही मानव प्रकृति के सौन्दर्य के प्रति आकृष्ट रहा है क्योंकि प्रकृति का सौन्दर्य उसके लिए सदैव आनंद प्रदान करने वाला रहा है और वह स्वयं भी इस आनन्द की खोज में रहा है। मानव अपने विकास के साथ–साथ अपनी कल्पनाओं और अपनी चेष्टाओं द्वारा उस आनन्द को प्राप्त करने का प्रयास करता रहा और उसकी कल्पनाओं और चेष्टाओं को अधिक से अधिक सौन्दर्यता एवं दिव्यता प्रदान करने के लिए ललित कलाओं का जन्म हुआ। ललित कलाओं से लौकिक तथा अलौकिक दोनों

Dr. Vandana Aggarwal (Music) 2018-19

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-30, Vol-06 April to June 2019

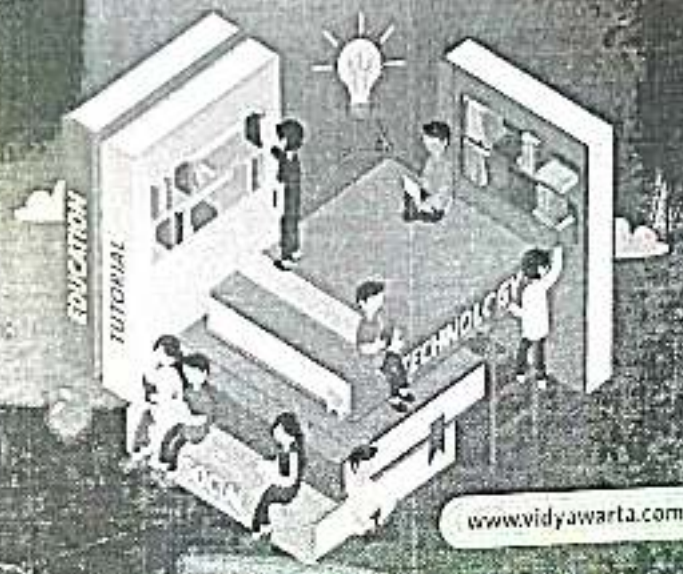

www.vidyawarta.com

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2019
Issue-30, Vol-06

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले
-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubl@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Index

01) Significance of India in Global economy ||09
Ashok A. B., Bidar, Karnataka State

02) Golding's Lord of the Flies: A representation of Evil and Salvation ||12
DR. AWDHESH KUMAR, MEERUT

03) Benefits of Sprit Training ||15
Bhoge Prasad P., Pune

04) THE POSITION OF ETHICS IN VENTURE CONTROL, SETTLEMENT AND ACQUISITION... ||16
MR. CHAVAN GANESH SAKHARAM & Dr. Manishkumar N. Varma, Pune

05) Text to Screen: A Study of Khushwant Singh's Train to Pakistan and its ... ||20
Dr. Karuna Pratap Deshmukh, Dist. Hingoli (MS)

06) A COMPARATIVE STUDY OF OEDIPUS COMPLEX IN D.H. LAWRENCE AND ARUN... ||24
DR. MANISHA DWIVEDI & CHANCHAL YADAV, kota

07) The prescribed General English Course (Core) under Dibrugarh University... ||27
Dr. Dilip Kumar Jha, Lakhimpur Kendriya Mahavidyalaya

08) Climate Change impact on Indian Agriculture ||30
Dr.Sawargaonkar Shankar Laxmanrao, Dist. Beed, Maharashtra

09) A study on National bank for Agriculture and Rural Development ||35
Dr. Anjali Kusum Om, HAZARIBAG

10) ARABIC LANGUAGE AND ITS CULTURE IN MALAYSIA ||40
Dr. Md. Shamsuddin Mallick, Kolkata

11) RIGHT TO EDUCATION: THE NEED OF HOUR ||44
Dr. J.K.Tiwari, Jhansi

12) Collection Development in University Libraries: A Case Study of Kakatiya ... ||49
T. Laxman Goud, Kuppam

13) OPTIMISING THE ECOSYSTEM FOR MUTUAL FUND PRODUCTS IN THE INTEREST OF ... ||57
Vedavathi H.S., *ramanagara*

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

14) Demonetization it's Impact on Agricultural Sector. ||68
Dr. B. V. Halmandage, Vasantnagaar

15) मोबाईलच्या अतिवापरामुळे विद्यार्थ्यांच्या आरोग्यावर होणारे परिणाम: एक ... ||74
श्रीमती चव्हाण अनिता उत्तमराव, जि. बीड

16) आचार्य नरहर कुरुंदकर - वक्तृत्वाच्या कोंदणातील व्यासंगाचा हिरा ||77
प्रा.डॉ.मीनाक्षी रामचंद्र देव, औरंगाबाद

17) स्वातंत्र्योत्तर परिप्रेक्ष्यात मराठवाड्यातील कथालेखिकांचे योगदान ||79
डॉ. सुनीता सांगोले, लातूर

18) भारतीय लोकशाही व मतदान प्रक्रीया ||82
डॉ.राजेश्री एन.कद्दू, जि.नागपूर

19) नियमितपणे सकाळच्या प्रहरी धीमेपणाने धावण्याचा व्यायाम करणाऱ्या आणि ... ||85
दिनेश म. ढेंगळे

20) तमाशा : परंपरा व परिवर्तन ||88
रोशराव पवाडे, औरंगाबाद

21) असगर वजाहत की कहानियों में 'अल्पसंख्यक चित्रण' ||96
प्रा. मजहर एन- कोतवाल, औसा

22) कलाकार पर समाज का प्रभाव ||97
डॉ॰ वन्दना अग्रवाल, मेरठ

23) हिन्दी विज्ञापन का भारतीय परिदृश्य ||101
अनीता बंसल, ग्वालियर

24) शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि के संबंध में आध्यात्मिक प्रज्ञा के प्रभाव का ... ||115
डॉ. हर्ष कुमार & कविता जैन, चित्तौड

25) स्त्री-विमर्श : नारी मुक्ति का चेतनामय आंदोलन ||126
गोभडे राजेश सखाराम , नांदेड

26) स्त्री सशक्तिकरण और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं संत विनोबा भावे (१९२१ ... ||148
डा॰ वंशीधर रुखैयार & लक्ष्मी कुमारी, हजारीबाग

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

27) [illegible] शिक्षा [illegible] ||111
रूपाली मिश्रा

28) [illegible] एक अध्ययन ||117
डॉ० [illegible] कुमार

29) जैन धर्म में अहिंसा [illegible] ||124
डॉ० प्रिया कुमारी, हजारीबाग

30) अंग्रेजी – शासन का भारत की कृषि क्षेत्र पर प्रभाव — एक ऐतिहासिक अध्ययन ||126
डॉ. सीताराम प्रसाद, हजारीबाग

31) योगासन एवम् प्राणायाम के संयुक्त अभ्यास द्वारा शारीरिक क्षमता के विकास का ... ||129
डॉ. रूद्रप्रताप एस. तिवारी, जि. नंदपुर

32) मनुस्मृति में निहित स्त्री विषयक विचार की वर्तमान प्रासंगिकता ||131
डॉ. वन्दना, लखनऊ

33) छत्तीसगढ़ के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के आर्थिक विकास का ... ||133
डॉ. अनीता मेश्राम, भिलाई जिला–दुर्ग (छ.ग.)

34) दुष्यंत कुमार की गजलों में सामाजिक चेतना एवं क्रांति का स्वर ||139
डॉ० रूपा शाह, रूद्रपुर (उधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

35) आधुनिक बैंकिंग में ऋण जोखिम : निवारक उपाय ||143
डॉ० नरेन्द्र पाल सिंह & डॉ. अनुज कुमार बिश्नोई, करनाल

36] प्राथमिक स्तर के बालकों की सामाजिक दक्षता ||149
नूतन गुप्ता & डा.पुष्पा त्रिवेदी, लखनऊ

37) CONTRIBUTION OF GOAN FOOTBALL CLUBS TOWARDS THE DEVELOPMENT OF.. ||152
LAXMIDAS R. MANGESHKER , Dr. V.R. PARIHAR, Nanded

38] Social Status of wrestling and wrestlers of Marathwada region: A study ||155
Dr. V.R.PARIHAR, Laxmidas Mangeshkar

39) Comparative Analysis of 'The Deserted Village' and 'Lyrical Ballads' ||158
ManeshKumar Natthusing Chavhan ,Pune

40) आदिवासी जिलों में बच्चियों की गुमगुदी बनाम यौन शोषण
डॉ.उषासिंह एवं एच.पी. सिंह, टीकमगढ़ (म.प्र.) ||161

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

...हो सकती है और मैं हिंदू हूँ... के बजाए ... मैं हिंदुस्तानी हूँ... के नारे आनेवाली पीढ़ियों के हृदय से ... और साम्प्रदायिक शक्तियों पर राष्ट्रभक्ति की जीत होगी | ... 'सैफू' के दिल पर गंगा-जमुनी संस्कृति की, सभ्यता ... दिल में बैठे डर को मिटाएँ ... और कहे ....

"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

हिंदी है हम वतन है - हिंदुस्तां हमारा |"

वर्तमान परिपेक्ष्य में, मैं हिंदू हूँ कहानी भारतीय मुस्लिमों के ... अनुरक्षित भावना को उजागर करते हुए, दंगे - फसाद, ... वातावरण को रोकने के लिए एक नयी बहस छेड़ दी है | ... एवं स्थितियाँ ऐसी बनी है कि, शहर में बसने वाला ... के मैदान से लेकर सार्वजनिक बाजारों और मण्डियों में ... फिरने से कतराता है, डरता हुआ बाहर निकलता है, ... दोस्तों से अछूत बनकर सलाम करता है | सामाजिक ... को शांत बहाल करने के लिए आज प्रजातंत्र में सबसे ... भूमिका मीडिया की होनी चाहिए | लेकिन इलेक्ट्रॉनिक, ... की छोटी-सी घटना को हाय-लाईट कर वातावरण को ... के बजाए उलझाने में लगा है | मीडिया की भाषा ने धार्मिक - ... है | इसका असर 'सैफू' जैसे बालक पर होना स्वाभाविक है |

हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक कामलेश्वर ने कहा था - देश में ... आतंकी नहीं है, लेकिन हर आतंकी मुसलमान है | इस ... का चिंतन भी मुसलमानों को करने की आवश्यकता आ पड़ी ... देश के मुसलमानों को भी यह शिक्षा देने की आवश्यकता है ... वे मजहब से मुसलमान है, पर वतनपरस्ती, कुबूलवतनों के ... हिंदुस्तानी है | और हिंदुओं को भी समझाना चाहिए की, ... कोई पराया नहीं, भारत का ही भूमि पुत्र है | वास्तव में दोनों ... को इससे अवगत करना होगा कि धर्म भले ही अलग-अलग ... देश हमारा है, हम देश के हैं, वतन की संस्कृति एक है और ... राष्ट्र की संस्कृति - गंगा-जमुनी-संस्कृति |

मैं हिंदू हूँ ... कहानी के द्वारा लेखक ने एक संवेदनशील ... को झकझोरकर जगाया और सहलाते - सहलाते ...... मैं भारतीय ... का एहसास भी दिलाया | भाषा सौंदर्य पाठक को चिंतन की ... में ले जाकर हमें सचेत करने में सफल हुआ है | यही है सच्चे लेखक की पहचान | .... यथार्थ रूप में ... मैं भारतीय हूँ...

संदर्भ ग्रंथ :

1. मैं हिंदू हूँ - असगर वजाहत |
2. इक्कीसवीं सदी में मुसलमान - वीरेन्द्रसिंह यादव |
3. भारतीय मुसलमान : शोध और बोध - तसलीम पटेल |
4. भारतीय मुस्लिम - डॉ. रब्बानी शेख |

22

कलाकार पर समाज का प्रभाव

डॉ० वन्दना अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग,
आर०जी० (पी०जी०) कॉलिज मेरठ

****

किसी भी समाज के सांस्कृतिक विकास में कला अपना प्रमुख स्थान रखती है। विद्वानों के मतानुसार कला में गति होती है तथा उस गति का माध्यम कलाकार होता है।

जो प्राणी किसी कलाकृति को मौलिक रूप से जन्म देता है वह कलाकार है।

प्राचीनकाल से ही हमारे समाज ने कलाकारों को विशेष सम्मान दिया है। कलाकार को राष्ट्र की एक सम्पत्ति स्वीकार किया गया है। भारतीय कला प्रायः कल्पना पर आधारित है। अतः यहाँ कलाकारों की कृतियों में मौलिकता प्रचुर मात्रा में देखने को मिलती है।

किसी भी कलाकार में कुछ मौलिक गुण विद्यमान होते है जैसे — उसकी अलौकिकता, उसकी भावुकता आदि। कलाकार चाहे सन्यासी हो अथवा विषय—सुख की लालसा करने वाला हो, आस्तिक हो अथवा नास्तिक, गरीब हो अथवा अमीर, परन्तु उनकी कला से ही उनके व्यक्तित्व का आभास होता है। किसी भी कलाकार की कृतियाँ समाज को कितना प्रभावित करती है ये ही उसकी कला का मापदण्ड होता है।

प्रत्येक कलाकार में अपनी एक अलग विलक्षण प्रतिभा होती है जिसके द्वारा वह एक मौलिक रचना को जन्म देता है और उसकी कलाकृतियों में उसके अनुभव एवं व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप दिखाई देती है।

कलाकार ने अपनी कल्पना द्वारा कला सृजन में महत्वपूर्ण कार्य किए। उसने अपनी कला से सदैव

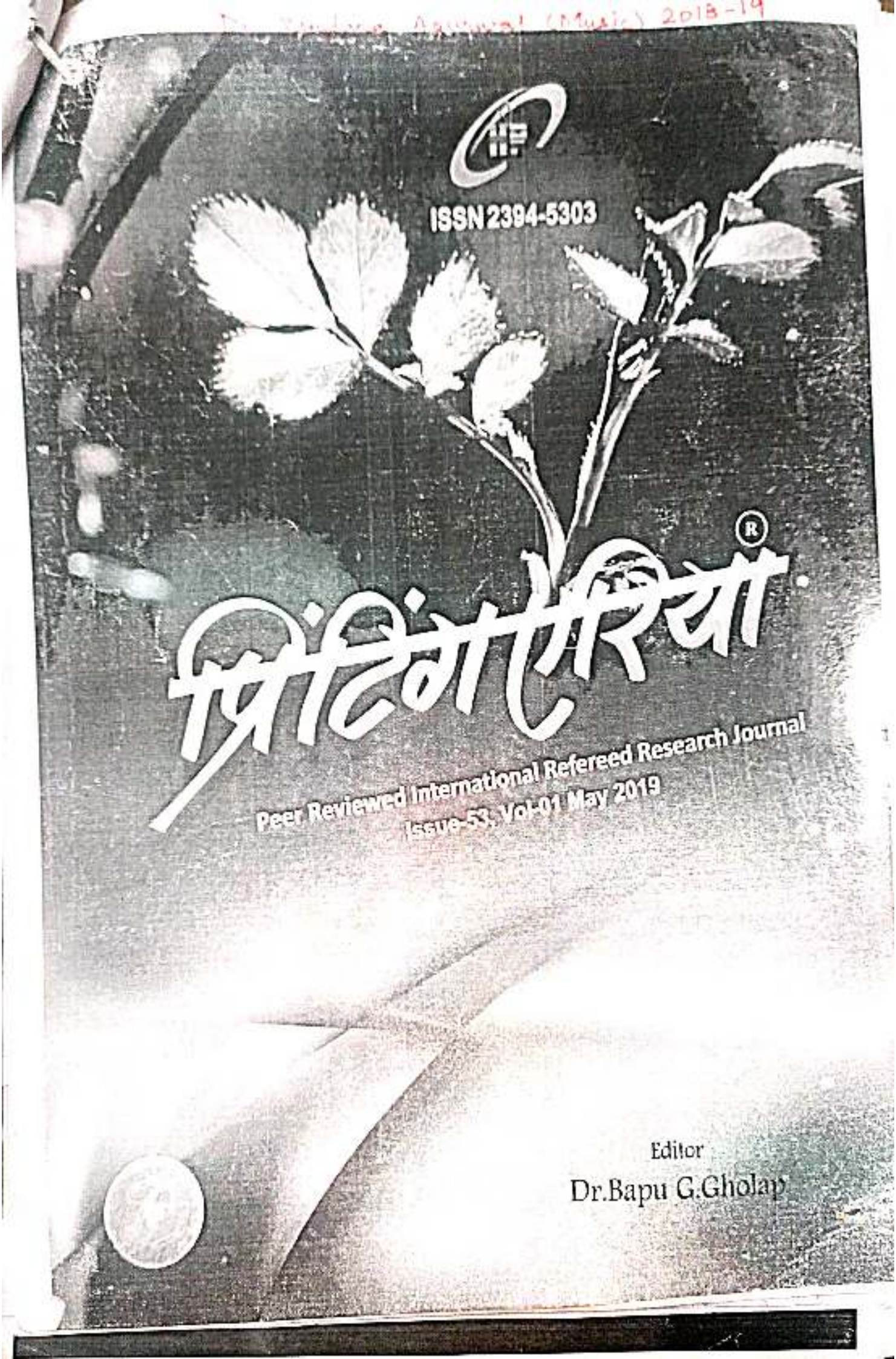

ISSN 2394-5303

प्रिंटिंग एरिया®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal
Issue-53, Vol-01 May 2019

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Index

01) THE POSITION OF ETHICS IN VENTURE CONTROL, SETTLEMENT ...
Mr. Chavan Ganesh Sakharam, Dr.Manishkumar.N.Varma, Pune ||10

02) Life Skills Integrated Curriculum in Schools
Dr. Geetha, K , Sonapur ||14

03) PANCHAYAT RAJ IN KARNATAKA: A STUDY ON THE ELECTIONS ......
Nagendrappa K.T, Dr. Y. Gangadhara Reddy,Bangalore. ||25

04) Problems faced by spinners and weavers for weaving of khadhi clothes....
Dr. A. Sujatha , G.Gunasri, Bodinayakanur. ||36

05) Parental Encouragement among high school students of Jalgaon District
Mrs. Sunita Arvind Jagtap, Chalisgaon ||40

06) Electronic resources and their application and limitations: a study
Kimi, Sadik Husian,Delhi ||43

07) Public Administration in India
Dr.santosh B.Kurhe, Parbhani. ||48

08) Recent trends in Capital Formation in Agriculture
Prof. Dr. T. P. More,Buldana (MS ||51

09) Incest and Adultery in Select novels of Ian McEwan
Deepati Pant, Nainital ||56

10) Pradhan Mantri Mudra Yojana as a tool of Finance Inclusion ......
Pardeep kumar, Gurana (Hisar) ||58

11) Impact of GST on Service Sectors
Prof. Dr. Sangram R. Raghuwanshi, Amravati ||63

12) GENDER INEQUALITY IN HIGHER EDUCATION
Dr.Manjulata, Km. Sapna, Meerut ||65

13) Intellectual property (IP): An Introduction
Miss. Mahadevi P. Shikare,Solapur ||71

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

14) Concept of Youth Unemployment in India
Dr. Paresh A. Shrimali, Patan ||73

15) Developing Inclusive Practices for Effective Implementation .....
Ms. Sharmishtha Solanki , Gujarat ||76

16) WATER POLLUTION AND ITS TREATMENT: THE ENVIRONMENT CONCERN
Dr. Usha Kumari, AzamgarhR ||80

17) Impact of Demonetization on Indian Economy
Prof. Warghade Janardhan Bhau,Palghar ||85

18) समाज मनाच्या एकवटलेल्या तिखट उद्गाराची कविता !
प्राचार्य डॉ.वसंत बिरादार,लातूर ||88

19) स्त्रीगीते : कौटुंबिक भावविश्व
डॉ. गौतम इ. ढवळे, लातूर ||92

20) जागतिकीकरणात मराठी भाषेचे संवर्धन
प्रा.डॉ.जगताप उज्वला शिवराम,परभणी ||94

21) डॉ. राममनोहर लोहिया यांचे जातीसंबंधी विचार ,
प्रा.डॉ. दम एस.आर. ,बीड || 97

22) उच्च शिक्षणाच्या विकासात राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांचे योगदान
प्रा.अनंत दादाराव मरकाळे,बीड ||100

23) नागपूर जिल्हयातील आदिवासी शेतक—यांच्या विविध समस्या
शालिनी दुर्गाजी मेन्ढें, डॉ. एम. के. नगरारे ,वर्धा ||103

24) राष्ट्रीय असंसर्गजन्य रोग नियंत्रण कार्यक्रम व त्याअंतर्गत कार्यरत .....
कु. संगीता ब. रोहनकर, डॉ.सुनिल म. ठाकुरवार ||114

25) ग्रामीण युवकांचे शैक्षणिक, राजकीय स्थिती ज्ञान व विकासात्मक दृष्टीकोन
डॉ. संगीता ओमनाथ तिहीले,अकोला. ||120

26) बंजारा जाति और संगीत
डॉ० वन्दना अग्रवाल,मेरठ ||123

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

27) मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिक स्त्री–जीवन का द्वंद ||127
अंजु लता,असम

28) विकास कर्म में नारी का योगदान ||131
डा. नीलम गौड, हनुमानगढ़

29) संजीव के उपन्यासों में आदिवासी जन-जीवन की समस्याओं का चित्रण ||133
डॉ. लक्ष्मण तुकाराम काळे, नांदेड़

30) माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम ...... ||135
डॉ.देवेन्द्र कौर, सादुलशहर

31) समकालीन कवि अज्ञेय एवं मुक्तिबोध की काव्यभाषा का तुलनात्मक अध्ययन ||138
डॉ. पठान ए.एम., बीड.

32) तबला वादक की कुशलता और सूझबूझपूर्ण संगत से कथक नृत्य में रसोत्पत्ति ||141
शशिकांत शर्मा, प्रो० वन्दना चौबे, राजस्थान

33) जी०ई०मूर: शुभ की अपरिभाष्यता ||144
डॉ०वीना शर्मा, गोरखपुर

34) यथार्थवाद : केदारनाथ अग्रवाल की कविता ||146
रीना यादव, इलाहाबाद

35) मानव गतिविधियों और पर्यावरणीय अपकर्ष ||149
डॉ. सुनील बाघला, डॉ. सुरजीत सिंह कस्वाँ, श्रीगंगानगर (राज.)

36) मानवीय क्रियाएं एवं पर्यावरण में आकस्मिक परिवर्तन ||150
Dr. Rajesh Kumar, Haryani.

37) गांधी विचार के आलोक में महिला सशक्तिकरण ||152
डॉ०शैलेन्द्र तिवारी,वाराणसी

38) भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की योगदान (१८५७–१९४७) ||156
Vikram S/o Randhir Singh,Kurukshetra

39) कौटिल्य के आर्थिक विचारों की वर्तमान में सार्थकता ||160
डॉ निहारिका श्रीवास्तव, प्रतापगढ़

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

26

बंजारा जाति और संगीत

डॉ० वन्दना अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग
आर०जी० (पी०जी०) कॉलिज,मेरठ

****

हृदय में उठे भावों को जब उसी रूप में संगीत के माध्यम से व्यक्त किया जाता है तो वह लोक–संगीत कहलाता है। निराला जी के अनुसार –

"हृदय की अनुभूतियाँ तरंगित होकर जब प्रकृति के मध्य बहने लगती है तो लोक–संगीत का जन्म होता है।"

किसी भी देश, प्रान्त, समाज अथवा जाति विशेष का लोक–संगीत वहाँ की सभ्यता व संस्कृति से बहुत सम्बन्ध रखता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर जी के अनुसार –

"संस्कृति का सुखद सन्देश ले जाने वाली कला है – लोक–संगीत"।

लोक संगीत के अन्तर्गत हमें रम्य, मधुर और करुण चित्र मिलते है। जिस प्रकार वर्तमान समय में शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत प्रचलित है। उसी प्रकार प्राचीन काल में भारतवर्ष में मार्ग–संगीत एवं देशी संगीत प्रचलित था – "ब्रह्मा ने जिसका मार्गण व अन्वेषण वेदों से किया, वह मार्ग–संगीत है और देश–देश में जन–रुचि के अनुसार जिस हृदय रंजक संगीत की अभिव्यक्ति हुई, वह देशी है।"[1]

हर मानव प्राणी को अपने जीवन को सरस बनाने के लिए किसी न किसी प्रकार के मनोरंजन की आवश्यकता होती है। उच्च कोटि के मनोरंजन से समाज की उन्नति होती है।

खेल, संगीत, नृत्य, विभिन्न त्यौहारों से मानव आपस में एक दूसरे को अधिक समझने में सफल होते है और ये व्यक्तियों को एक–दूसरे के निकट भी लाते है। लोक संगीत के अन्तर्गत लोकगीतों का विशेष महत्व है। "जीवन की सहज क्रिया और व्यापारों में घोर जनसमुदाय के निश्छल, सरल और स्वाभाविक भाव गीतों के बोल बनकर उनके कंठस्वर में तैरने लगते है, खेत, नदी, खलिहान, पहाड़, मैदान, घर सभी इनके निर्माण स्थल है। हल चलाते हुए, पशु चराते हुए, चक्की पीसते हुए, बर्तन मांजते हुए प्रत्येक सामान्य कार्य व्यापार के समय इन गीतों का उदय हुआ है।"[1]

हमारे देश में घुमन्तू जनजाति की संख्या काफी मात्रा में है। बंजारा जाति भारत की घुमन्तू जातियों में प्रमुख स्थान रखती है। यह जाति सामान्य एवं सभ्य जीवनधारा से कटने के कारण अपनी विशिष्ट संस्कृति, लोकभाषा, लोक–संगीत एवं अपनी वेशभूषा आदि की अलग पहचान रखती है। बंजारे प्रायः गरीब होने के कारण अभावग्रस्त जीवनयापन करने के लिए मजदूरी करते है, परन्तु यह उनकी विशेषता है कि गरीब एवं अभावग्रस्त होने पर भी अपने लोक–संगीत में मग्न, हर्षोल्लास के साथ श्रम करते हुए अपना जीवन व्यतीत करते है।

बंजारा जनजाति हिन्दू धर्म से लोग प्रभावित मूलतः राजस्थानी है, परन्तु १८वीं शताब्दी के अन्त में सम्भवतः अकाल आदि के कारण ये लोक अन्य राज्यों में जाने लगे। बंजारा समाज की बस्ती को तांडा कहते है। समस्त देश के बंजारों की संस्कृति, भाषा, वेशभूषा, खानपान आदि में प्रायः समानता रहती है। मूलतः हिन्दू धर्म को जानने के कारण इस जनजाति पर हिन्दुओं के संस्कारों का भी प्रभाव दिखाई देता है।

लोक संगीत के अन्तर्गत बंजारा जाति के लोकगीतों से पता चलता है कि बंजारा जनजाति में खानपान में बाटी (ज्वार, बाजरा की रोटी), रबड़ी (मट्ठे जैसा व्यंजन), पोली (गेहूँ के आटे की मीठी पूरी इसमें उबली दाल में गुड़ डालकर बनाते है), आमटी (स्वादिष्ट साग–चने की दाल, मिर्च, मसाले से युक्त) आदि व्यंजन होते है।

पटोराजा बेटा ये
गोल घालन दलिया खरावये।[1]

अतः बंजारों में रोजमर्रा की जिन्दगी में बाजरा, ज्वार, दाल, बाटी, दलिया आदि का प्रयोग होता है तथा त्यौहारों अथवा अतिथियों के लिए रबड़ी, पुरणपोली (जैसा मीठा पदार्थ) प्रयोग किया जाता है परन्तु इस जाति को शाकाहारी की अपेक्षा मांसाहारी भोजन

DR. BHAWNA MITTAL (PHYSICAL EDUCATION)

IMPACT FACTOR - 1.845 (ISRA) 2018 - 2019 ISSN : 2279-0306

International Journal of Physical Education Health & Sports Sciences

MARCH 2019

VOLUME : 08 ISSUE : 01

A Journal of Physical Education Foundation of India

INTERNATIONAL JOURNAL OF PHYSICAL EDUCATION HEALTH & SPORTS SCIENCES

CONTENT

- Physical Fitness of Young Sportspersons of Bangladesh / *Md. Ashadur Rahman, Dr. Md. Sohel* 6
- The Relationship between Selected Anthropometrical and Physiological Variables in Indian Elite Male Judokas / *Anupal, Subrata Dev, Kanwal Puri, Dr. Neha, S. Biswas, T. Medabala* 12
- Pledge for Drugs Free Sports / *Dr. Rakesh Gupta, Ms. Meenakshi Pahuja* 18
- Side Effects of Doping on Health & Fitness: An Urgent Need of General Awareness to Save Humankind / *Dr. Yogesh Kumar* 21
- Conceptual Framework for redesigning the Sports Policy of India / *Dr. Awadhesh Kumar Shirotriya* 27
- The Effect of Pranayama on Respiratory Efficiency Variables / *Dr. Bhawna Mittal* 38
- Speed and Endurance of Wrestling and Kabaddi Players of Junior College Boys: A Comparative Study / *Mr. Bhushan Bhute, Dr. Nilesh Bansode* 42
- Blood Doping Versus Altitude Training : A Review Article / *Dr. Neha, Snehangshu Biswas, Subrata Dev, Anupal, Tambi Medabala* 46
- To Predict the Performance Ability of Jumpers and Throwers in Relation to Selected Motor Fitness Components / *Dr. Shashi Kumanjia* 50
- Gender Differences in Personality Characteristics of College Going Volleyball Players / *Ms. Anamika Nimkar, Dr. Nilesh Bansode* 58
- GUIDELINES FOR AUTHORS 63
- SUBSCRIPTION FORM 64

ISSN 2279-0196

IMPACT FACTOR - 1.345 (ISRA)

THE EFFECT OF PRANAYAMA ON RESPIRATORY EFFICIENCY VARIABLES

Dr. Bhawna Mittal*

ABSTRACT

Yoga is the science practiced in India since ancient times. It is derived from Sanskrit word Yuj means to bind together. Pranayama, a stage of yoga practice, is an ancient science which makes use of voluntary regulation of breathing and stress free mind. The present study was carried out in 30 physical education teachers of refresher course of physical education and yogic science in Kumau University, Nainital. These subjects were given Pranayama practice programme for one hour daily in morning – 6 days in a week for 15 days. The subjects were assessed for various respiratory efficiency variables like Respiratory Rate (RR) and Breathing Holding time before and after Pranayama practice. Statistical analysis was done by single sample group t- test. There was significant decrease in Respiratory Rate (RR) and Breathing Holding times were significantly increased in subjects after the practice of pranayama.

KEY WORDS : Pranayam, Respiratory Efficiency

INTRODUCTION

Yoga is the science practiced in India since ancient times. Modern medical science tries to achieve optimum physical & mental health of the individual through preventive, curative & promotive approach. Patanjali, the father of yoga, has suggested eight stages of yoga to secure health of body, mind & soul which are known as "Ashtang Yog". From medical point of view, out of above eight stages, Asans and Pranayam are more important.

Pranayama is an ancient science, which makes use of voluntary regulation of breathing and stress free mind. The word Pranayama is formed by two words that are Prana & Ayama. Prana means vital force which provides energy to different organs & controls vital life processes. Ayam means voluntary effort to control & direct the Prana. Numerous people all over the world have derived subjective benefits by practicing Pranayama regularly. But to prove its efficiency as a health science it must be studied in the light of modern medicine. Hence, present study was undertaken to find out the effects of Pranayama on respiratory

*HOD & Assistant Professor, Dept. Of Physical Education, RG PG College, Meerut (UP) India

DR. SEEMA JAIN (ZOOLOGY)

2018-19

(https://www.fac... Int. Investigat...

(https://twitter.c...

International Journal of Zoological Investigations

ISSN : 2454-3055 (index.html)

WELCOME !

International Journal of Zoological Investigations

International Journal of Zoological Investigations (IJZI) is a peer reviewed six monthly open access journal that publishes original research papers as well as review articles in all areas of zoology.

Impact Factor

CiteFactor Impact Factor (2020-21) = 0.95   Index Copernicus Value 2016 - 75.30   International Society of Indexing ISI Impact Factor - 2.684

IIJIF Impact Factor - 2.41

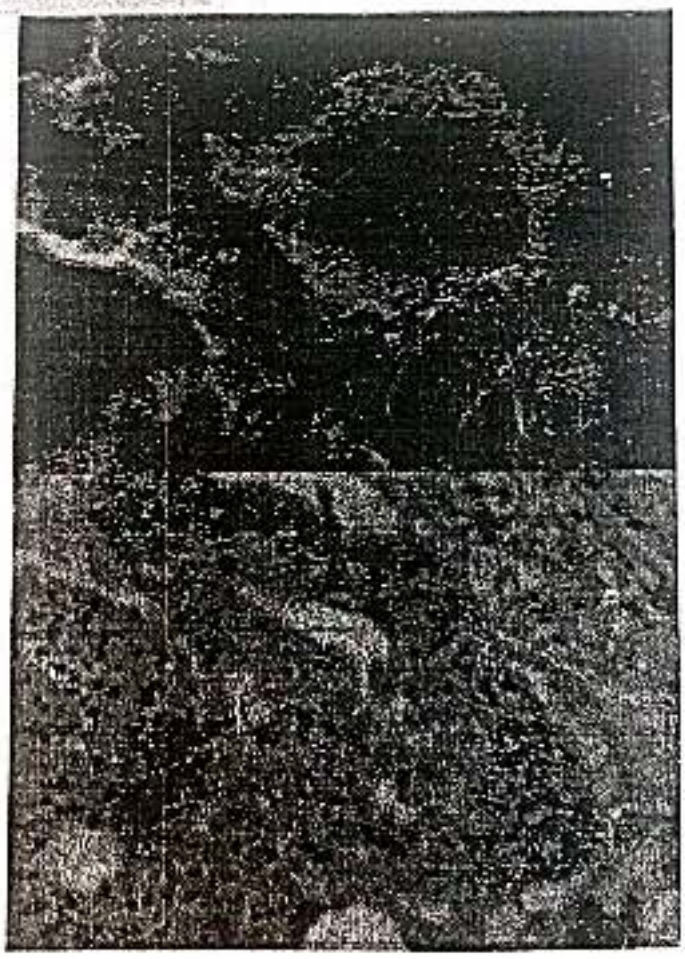

International Journal of Zoological Investigations

Contents available at Journals Home Page: www.ijzi.net

ISSN: 2454-3055

DNA Quantification of Wild and Cultured *Cirrhinus mrigala* (Hamilton, 1822) Collected from Different Sites of Western Uttar Pradesh, India

Nisha Rana* and Seema Jain

Department of Zoology, RGPG College, Meerut 250001, India

*Corresponding Author

Received: 20th November, 2018
Accepted: 15th December, 2018

Abstract: The mrigal carp *Cirrhinus mrigala* is an economically important food fish and also an important aquaculture freshwater species. DNA content of fish tissues are of considerable interest for their specificity in relation to food values of fish and evaluating their physiological requirements at different periods of life. Fish exhibit large variations in their biochemical contents from species to species. The present study was conducted on DNA extraction and determination of DNA quantity of both male and female of wild and cultured *Cirrhinus mrigala* using Nanophotometer. DNA extraction was done and extracted DNA was analyzed using nanophotometer to determine the concentration of DNA. For the present study both male and female of wild *Cirrhinus mrigala* (from middle Ganga Region) and cultured *Cirrhinus mrigala* (from culture ponds and/ hatchery) were taken from different sites of Western Uttar Pradesh. The value of DNA concentration in female of wild *Cirrhinus mrigala* was between 62 - 66 ng/µl and of male was between 64- 78 ng/µl. The value of DNA concentration in female of cultured *Cirrhinus mrigala* was between 60 - 88 ng/µl and of male was between 70- 78 ng/µl.

Keywords: DNA extraction, DNA quantification, nanophotometer, *Cirrhinus mrigala*

Introduction

The *Cirrhinus mrigala* (also known as the mrigal and locally as Nain in western Uttar Pradesh, India) is a species of ray-finned fish in the genus *Cirrhinus*. Mrigal is the benthopelagic and potamodromous plankton feeder. It inhabits fast flowing streams and rivers, but can tolerate high levels of salinity. It reaches a maximum length of 1 m (3.3 ft)[Froese *et al.*, 2014]. Mrigal is popular as a food fish and an important aquaculture freshwater species throughout South Asia. This species is widely farmed as a component of a polyculture system of three Indian major carps, along with rohu and catla.

The introduction of aquaculture across India started in the early 1940s and between 1950s and 1960s in other Asian countries. The mrigal fails to breed naturally in ponds, thus induced breeding is done. The Indian carps are considered as a delicacy compared to any

DR. SEEMA JAIN (ZOOLOGY)

2018-19

CONNECT Journals

Directory of Journals, Publishers, Journal Subscription Service & Management

My Profile
Login
Register
Subscribe/ Order Journals
Add Your Journal

Contact Us

JOURNAL OF ENVIRONMENT AND BIO-SCIENCES

Title No.: CJ-T0343

Journal Information

Editor	PROF. B. D. JOSHI
Print ISSN	0973-6913
e-ISSN	0976-3384
Periodicity	Half-Yearly (2 Issues per year)
Published Since	1986
Publishing Cycle	First issue of each Volume published in June
Latest Volume	Vol. 34 in 2020
Back Volume	Some Available
Availability	Print | Online - Free with Print
Publisher URL	www.connectjournals.com

The Journal of Env. and Biosciences, previously known as Himalayan Journal of Env. and Zoology is being published uninterruptedly since 1986. It is a medium for publication of Original research papers on Environment and various disciplines of Biosciences, Chemistry, Biophysics Geology. This journal is abstracted & indexed in : Indian Science Index (INSDOC), Paryavaran Abstracts, Govt. of India, Russian Academy of Science, Russia, Zoological Records, U.K., CAB Abstracting Service, U.K. NAAS rating of year 2017 for this journal is 4.43 on a scale of 1 to 10.

Subscription Rate for the Year- 2020

Rate [INR]	Print	Online	Print+Online
Individual	5000.00	5000.00	5000.00
Institutional	6000.00	5000.00	5500.00

Rate [US $]	Print	Online	Print+Online
Individual	250.00	250.00	250.00
Institutional	250.00	250.00	250.00

Now Published by CONNECT JOURNALS.

* Current prices to be checked before order. Regd.Post/Courier Charges extra.

Add To Cart

Published By CONNECT JOURNALS, INDIA
E-published By CONNECT Journals

- Current Issue
- Subscription
- Archives
- Editorial Board
- Author Index[Current Vol.]
- Author Guidelines
- View Sample Article
- Register For FREE 30 days trial

Useful Links

OUR SERVICES
Home
About Us
Disclaimer
Privacy Policy

SEARCH
Quick Search
Advanced Search
Title Search
Alphabetical Search

Publisher Search
Article Search
Author Search
Help

CUSTOMER SERVICES
User Panel
Free e-Journals

SUPPORT SERVICES
Contact Us
Post Article
Add Your Journal
Feedback

Env. Bio-Sci., 2018, Vol. 32 (2): 285-290

ISSN 0973-6913 (Print), ISSN 0976-3384 (On Line)

IMPORTANCE OF OTOLITH MICROCHEMISTRY AS POLLUTION INDICATOR: A BRIEF REVIEW

Neetu Nimesh* and Seema Jain

Research laboratory, Department of Zoology, RG (PG) College, CCSU, Meerut, UP, India

*(Email ID- neetunimesh25@gmail.com)

Received: 31-10-2018 Revised: 13-11-2018 Accepted: 15-11-2018

Otolith microchemistry has been used for last three decades in various studies such as life history, migration pattern and environmental ecology of fish stock of commercial importance. The concentration of elements and isotopes in otoliths are compared to those in the water in which the fish inhabits. The accumulation of heavy metals in fish otoliths depends on a number of factors, including the concentration of the particular heavy metal in the environment, its bio-availability and the physiological state of the individual fish (affecting the exchange rate between the external and internal environments). The chemical composition of otoliths is regulated by the physiological activity of fish, which in turn is influenced by environmental conditions. The concentration of heavy metals in calcified otoliths of fish acts as a tracer of environmental pollution exposures. This article compiles the studies in which calcified otolith acts as pollution indicator.

Key words: Otolith microchemistry, Heavy metals, Pollution indicator

Otoliths are the structures present in the inner ear cavity of all teleost fishes. They are located in the semi-permeable membrane and serve as a balancing organ and help in hearing. Otoliths are composed mainly of calcium carbonate mostly in the form of aragonite. The trace elements present in the aragonite mixture are derived from the surrounding water of fish. The impurities are reflected by water chemistry and otolith chemistry (Campana, 1999; Campana and Thorold, 2001; Telmer, 2004). Otolith is the only calcified structure that grow throughout the life of fish, are acellular and metabolically inert means any element and compound deposited on its surface is permanently retained because of this property otoliths are able to record the environment to which the fish is exposed (Campana and Neilson, 1985; Neilson and Geen, 1982; Campana, 1990).

Total 31 elements are detected in otoliths till date. The majority of the elements are present at micro and trace levels. Many trace elements require investigation for detection. Sr/Ca ratios play an important role in studying hydrobiology of fish (Campana, 1999). The use of otolith as indicator of fish age reached century back. The field of otolith chemistry is gaining interest due to its several applications. The daily growth increments on otolith record aspects of environment to which the fish is exposed. The fact that the otolith is acellular and metabolically inert means any element accreted on its surface is permanently retained. It records the entire lifetime of fish. (Campana and Neilson, 1985). Otolith also helps in detection of anadromy (Secor 1992), determination of migration pathways (Thresher *et al.*, 1994), Age validation (Kalish, 1993), Stock identification (Edmonds *et al.*, 1989), Use as natural tag (Campana *et al.*, 1995), used as metabolic indicator and chemical marker (Schwarcz *et al.*, 1998). Many applications of otoliths exist, and many have been proposed. The above mentioned applications play an important role in fishery biology and its management.

Prior to 1980, there is less discussion on Otolith microchemistry and its various applications in pollution related studies. Otolith chemistry and microstructure analysis have been developed in last three decades and showed various applications of commercial importance. In recent years otolith chemistry has been used to study population structure, species identification, elemental composition of otolith as pollution indicator, age and growth studies, migration pattern, as natural tag etc.

The research is accelerated into otolith chemistry because of particular chemical properties of otoliths. The calcified structure becomes important due to these chemical properties. In the following account, we offer an overview of otolith as environment recorder and microchemistry of otolith as pollution indicator. The review is based on the future directions suggested by Campana in this field (Campana, 1999). The goal of this review is to consolidate the literature in this direction. This paper reviews the importance of otolith microchemistry as pollution indicator to study biology of fishes and sustainable development.

ACADEMIC JOURNALS

Home | Journals | Proceedings | Conferences | Submit Manuscript | Login

INTERNATIONAL JOURNAL OF

FISHERIES AND AQUACULTURE

Abbreviation: Int. J. Fish. Aquac. | Language: English | ISSN: 2006-9839 | DOI: 10.5897/IJFA | Start Year: 2010 | Published Articles: 213

IJFA Home | About IJFA | Editors | Instructions | Articles | Archive | Articles in Press

IJFA - Abstracting & Indexing

IJFA Policies

Abstracting & Indexing

Archiving Policy

Article Metrics

The International Journal of Fisheries and Aquaculture is listed in the abstracting and indexing databases below. Please click on any of the databases to view the journal on the website of the database.

Chemical Abstracts (CAS Source Index - CASSI)
CNKI Scholar
Dimensions Database
Google Scholar
[illegible]

DR. SEEMA JAIN

IJFA - Abstracting & Indexing

IJFA Policies

- Abstracting & Indexing
- Archiving Policy
- Article Metrics
- Contact Us
- Copyright & Permissions
- Editorial Policies
- Metadata Harvesting
- Open Access Policy

The International Journal of Fisheries and Aquaculture is listed in the abstracting and indexing databases below. Please click on any of the databases to view the journal on the website of the database.

Chemical Abstracts (CAS Source Index - CASSI)
CNKI Scholar
Dimensions Database
Google Scholar
Microsoft Academic
SAJE Library – (Society of African Journal Editors)
The Essential Electronic Agricultural Library (TEEAL)
WorldCat

Vol. 10(10), pp. 122-128, October 2018
DOI: 10.5897/IJFA2018.0698
Article Number: 0A75E4159159
ISSN: 2006-9839
Copyright ©2018
Author(s) retain the copyright of this article
http://www.academicjournals.org/IJFA

ACADEMIC JOURNALS

International Journal of Fisheries and Aquaculture

Full Length Research Paper

Otolith morphometry and fish length relation of Amblypharyngodon mola (Ham.) from Middle Ganga region (India)

Neetu Nimesh* and Seema Jain

Laboratory of Fish taxonomy, Department of Zoology, RGPG College, CCS University, Meerut, Uttar Pradesh, India

Received 6 August, 2018; Accepted 30 October, 2018

The aim of this study was to determine a correlation between the length, width and weight of otoliths and the length and weight of fish samples of Amblypharyngodon mola (Hamilton,1822), a Rasborine fish caught from Middle Ganga region. Total length (TL) measurements were made with a 1mm precision fish length measuring scale. Image J software was used for measuring otolith length and width. This study shows strong correlation between fish length (TL), otolith length (OL) and width (OW), and similarly shows the correlation between Fish weight (TW) with otolith mass (test, $P<0.05$). According to this study, Otolith size depends on the fish length and fish weight and the regression coefficients between the relationship of fish length and fish weight with otolith measurements was found to be the best indicator for estimating the growth of fish.

Key words: Amblypharyngodon mola, Rasborine fish, otolith morphometry.

INTRODUCTION

Amblypharyngodon mola (Hamilton,1822), commonly known as 'Indian carplet' or 'pale carplet', is widely distributed in fresh water habitats like ponds, streams, rivers, flood plain wetlands, canal, paddy fields, etc. It is an economically important small Rasborine fish and it belongs to Cyprinidae family. It can be cultured successfully in small seasonal ponds with carps and can be a good income source for the poor class. It has very high content of calcium, iron and vitamin A (Zafri and Ahmad, 1981). This fish is relished by the common man of the region in smoked, dried as well as pickled form. It also has a good demand as an ornamental fish in the international market. Mola is a self-recruiting species and its culture is being encouraged among the farmers in North-East India to overcome the nutritional deficiency (Roos et al., 2002). It is a surface feeding fish with mouth directed upwards and lower jaw the longer. It is an herbivore fish, feeding mainly on algae and aquatic plants and lives in shallow water. Lateral line incomplete extending to 15 scales, with 9 or 10 scales between it and the base of ventral fin (Jain, 1987).

The spawning season of A. mola is from February to October. The sex ratio showed a greater number of females over males but with no sexual dimorphism.

*Corresponding author. E-mail: neetunimesh25@gmail.com.

Author(s) agree that this article remain permanently open access under the terms of the Creative Commons Attribution License 4.0 International License

INTERNATIONAL JOURNAL OF SOCIAL SCIENCES REVIEW

Chief Editor
Sunil Saini, PhD

IRW International Journal of Social Sciences Review

Volume 6 Issue 9 November, 2018

Contents

Determinants of early child marriage among high prevalence state in India 1676-1685
Purnendu Modak

Perceived physical burden among caregivers of person with chronic mental illness 1686-1692
Jaya Bharti and Pallavi Bhatnagar

Investigating the relationship between approval motivation and sensitivity to befallen injustice 1693-1700
Siuli Bhandary

Performance of women representatives in *Gram Panchayats* in Punjab: A case study of Mansa district 1701-1706
Rupinder Singh and Ravneet Kaur

Attitude towards home and family and loneliness among substance users 1707-1712
Priyanka and Shrikant Vashisht

Psychological capital and job satisfaction: A systematic review 1713-1718
Kahkashan Hashmi and Basheer Hasan

An exploratory study on knowledge and perceptions of parents and teachers on adolescent reproductive and sexual health education in Pondicherry 1719-1728
Shabarban N. L., Sibnath Deb, and Fathima Sehra

Education, employment, and socio-economic status as determinants of the cancer caregiving experience in India 1729-1736
Sioma Chakravarty and Dhanalakshmi D.

Energy security: The outlook for India, and the way forward 1737-1743
Sunil Kumar and Niti Nandini Chatnani

Attitude towards disability among learning disability children 1744-1748
S. Srividya

Association between early life events, loneliness and fear of negative emotions among female students 1749-1753
M. Mahalakshmi, K. Sumaiya, and Ayesha Arif Zaidi

Development and psychometric evaluation of the Hindi version of adolescents' Self-disclosure Scale 1754-1756
Sweta Pathak and Shubhra Sinha

A study of customer satisfaction on Xiaomi smartphone 1757-1759
Kanika Garg, Mukesh Sharma, Nikhil Galhotra, and Sourik Pal

Vitamin D deficiency among pregnant women attending tertiary care centre in Tamil Nadu 1760-1763
Kavitha Durairaj, R. Murali, J. Rukumani, M. Muthulakshmi and P. Venkataraman

Cognitive emotion regulation and ability to delay gratification among alcoholic and non-alcoholic people 1764-1767
Sachin Kumar and Kumkum Pareek

Optimism and quality of life: A correlational study among adolescents 1768-1770
Harshmeet Kaur and Shruti Shourie

Cognitive emotion regulation and ability to delay gratification among alcoholic and non-alcoholic people

Sachin Kumar and Kamlkant Pareek
Department of Psychology, R.G. (P.G.) College, Meerut, Uttar Pradesh

We know that individual with any type of addiction has to go through a course of negative emotions along with the ways of regulating them, in the course of getting addicted. This paper is to investigate the differences between the alcoholic and non-alcoholic in terms of [illegible] cognitive emotion regulation strategies and the ability to delay gratification. This study was conducted in district [illegible]. Data was collected by using [illegible] (CERQ) of Garnefski and, and [illegible] Ability to Delay Gratification on a sample of [illegible] individuals (alcoholic=[illegible] & non-alcoholic=[illegible]) with purposive sampling technique. In order to test the difference between alcoholic and non-alcoholic in terms of predictive variables ability to delay gratification and various cognitive emotion regulation strategies Discriminant Analysis was employed. Result of the study revealed that ability to delay gratification is positively associated whereas other strategies of cognitive emotion regulation [illegible] rumination & catastrophizing are negatively associated with the discrimination function between alcoholic and non-alcoholic people. It means that alcoholic group differed from non-alcoholic group because of having low score on ability to delay gratification and high score on self-blame, rumination and catastrophizing.

Keywords: cognitive emotion regulation, ability to delay gratification, alcoholic-non-alcoholic

The concept of emotion regulation, which appears to be quiet similar to the process of self regulation, as a part of emotion focused coping is a relatively late addition in the field of emotion. Emotion regulation involves an emotional state as well as behavior and physiological arousal, which emerges to develop as the result of interaction between biological maturity and sensitive-responsive care giving (Diener & Mangelsdorf, 1999; Kopp, 1989; Stifter & Braungart, 1995; Von Salisch, 2001). Ways of regulating one's own emotions allow one to handles one's own behavior and internal feelings to reach goals (Eisenberg & Morris, 2002; Thompson, 1994).

Ability of delaying gratification is also a relatively new concept. It is often noticed in modern era that people have grown so impatient that they immediately want to get anything they want. Mischel and Ayduk (2011) defined this concept as "the ability to put off a small, but immediate, reward in favor of receiving a larger reward latter." Walter Mischel in 1970 conducted a famous experiment in which a group of children was given a choice of eating either a single cookie immediately, or waiting for experimenter till he returned, in order to get more cookies. Finding of this experiment revealed that many children ate the cookie almost immediately, whereas, a few children resisted for a long time to receive another one. Such children, who resisted for a long time in expectation of another one were termed as 'high-delay children' and were found to be better in terms of performance in school and fewer behavioral problems in comparison of those who could not resist. When these high-delayed children were studied in the age of adulthood they were found to successfully complete their college at higher rates and started to earn higher income than other. On other hand the children who could not resist, were found to struggle with problems like drug and alcohol addiction. This experiment concluded that the ability to delay gratification may be one of the most important skills to learn for a satisfactory and successful life.

Studies have shown that emotion regulation process is associated with the ability of delaying gratification (Gross & Thompson, 2007). In simple words it can be said that the ways of dealing with task-induced emotions influence one's ability or inability to wait for a larger reward. In other words, to postpone the immediate pleasure which may leads negative emotional feeling such as frustration, dejection and anger, certainly be influenced by the ways one use to deal with that negative emotion. Various studies demonstrated the significance of emotional aspects in addictive behavior (Khantzian, 1990; Southam-Gerow & Kendall, 2002). As the ways of regulating emotions involve cognitive effort in order to focus or shift the attentional process, to monitor arousal-level, and to actively use the cognitive strategies to minimize unpleasant stimuli as well (Rothbart et al., 2000) cognitive emotion regulation plays a crucial role in alcohol and other drug addictive behavior. Cole et al. (1994) also found in their study that emotional self-control contributes in dealing with negative emotions such as sadness or anger by reducing an excessive level of arousal.

In their study Nikmanesh, Kazemi, and Khosravi (2015) found that loneliness and the difficulties in regulation of subsequent emotion significantly predict the risk of drug abuse among students of Universities of Sistan and Baluchestan, southeastern of Iran. Studies also indicated clearly that poor regulation of emotional response is positively related with substance-use among adolescents and adults (Bickel, Odum, & Madden, 1999; Petry, Bickel, & Arnett, 1998; Simons, Oliver, Gaher, Ebel, & Brummels, 2005). Patock-Peckham, Cheong, Balhorn, and Nagoshi (2001) also showed by conducting a study on college students that good self-control is inversely related to alcohol-related problems. Poor emotional regulation explains also the difficulty in recovering from

Corresponding Author:
Sachin Kumar
Research Scholar, Department of Psychology
R.G. (P.G.) College, Meerut, Uttar Pradesh
E-mail: [illegible]@gmail.com